भाषा विकास शृंखला - 11

सफेद दाढ़ी वाला बकरा

© दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति

प्रथम संस्करण	:	1999
मूल्य	:	14.00 रुपए
प्रकाशक	:	दिगन्तर टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियां रोड, जगतपुरा, जयपुर-302025
मुद्रक	:	भालोटिया प्रिंटर्स, जयपुर
कला पक्ष	:	हरीश जी.
आवरण	:	उमाशंकर शर्मा

प्रस्तावना

सीखने में सदा ही सीखने वाले के अपने प्रयत्न सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं । सीखने के लिए शिक्षार्थी की तरफ से प्रयत्न होने की पूर्व शर्त है सीखने की इच्छा। यह आवश्यक नहीं है कि सीखने की इच्छा स्वत: स्फूर्त हो । अच्छा शिक्षक बच्चे में सीखने की इच्छा पैदा कर सकता है । विद्यालय का एक महत्त्वपूर्ण काम यह है भी । पर अपने आप सीखने के प्रयत्नों के लिए बच्चे को विद्यालय में अवसर चाहियें और माहौल चाहिये । इस प्रकार का माहौल बनाने एवं अवसर देने के लिए विद्यालय में शिक्षण विधियों से लेकर शिक्षक-बालक संबंध तक कई प्रयत्न करने पड़ते हैं। बच्चों द्वारा काम में ली गई सामग्री इन में से एक है । सामग्री जो बच्चे को अपने आप सीखने को प्रेरित करे, दिशा दे, विश्वास दिलाये और चुनौती दे ।

ऐसा नहीं है कि उपरोक्त प्रकार की सामग्री शिक्षक की स्थानापन्न हो सकती है। यह असंभव है । कोई भी शिक्षण सामग्री स्नेहपूर्ण और संवेदनशील मानवीय अंत:क्रिया से होड़ नहीं कर सकती। सामग्री तो बस शिक्षक व बच्चे की मदद के लिए एक उपकरण भर होती है। अत: इसे इसी दृष्टि से देखा जाना चाहिए । अपने आप सीखने की इच्छा आत्मविश्वास एवं क्षमताओं का विकास प्राथमिक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिये । सामग्री इस आदर्श को लगातार याद रखने में शिक्षक की मदद कर सकती है एवं अन्य शर्तें पूरी होने पर बच्चे के लिए सृजनात्मक तरीके से समझते हुए काम करने के अवसर बनाने में मदद कर सकती है ।

प्रस्तुत पुस्तकें इन्हीं तथा इसी तरह के अन्य विचारों को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं । भाषा के क्षेत्र में यह माना गया है कि आरंभ में भाषा विकास का सर्वश्रेष्ठ तरीका बच्चे के जीवनानुभवों को व्यवस्थित तरीके से संजोने, उन पर विचार करने एवं उन्हें शाब्दिक अभिव्यक्ति देने के अधिकाधिक अवसर सृजित करना ही है । अत: बच्चे की अपनी मातृभाषा (गांव की स्थानीय भाषा) प्रथम दो-तीन वर्ष तक सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । ठोस अनुभव से शब्द तक की अवधारणात्मक यात्रा सारे मानव अपनी मातृभाषा में ही सर्वश्रेष्ठ ढंग से कर सकते हैं । एक बार यह क्षमता हासिल कर लेने एवं तद्जनित आत्मविश्वास प्राप्त कर लेने के बाद कथित मानक भाषा कोई बड़ी बात नहीं रह जाती।

भाषा शिक्षण का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है लिखित भाषा पर अधिकार । मौखिक भाषा के विकास के लिए एवं लिखित भाषा पर अधिकार के लिए प्रयत्न विभिन्न क्रियाकलापों एवं अभ्यासों के माध्यम से आरंभ (विद्यालयी शिक्षण का) से ही साथ-साथ चलने चाहिये । जहां मौखिक भाषा के विकास के प्रयत्न बहुत खुले एवं शिक्षक तथा बच्चों की बहुत सी स्वत:

स्फूर्त गतिविधियों में हो सकते हैं वहीं लिपि पर अधिकार के लिए व्यवस्थित अभ्यास आवश्यक होता है । यह नजरिया इस शृंखला की आरंभिक पुस्तकों में अपनाया गया है । एक बार पढ़ने-लिखने में अभ्यास एवं आत्मविश्वास आ जाने पर भाषा विकास शृंखला की पुस्तकों पर काम करना आरंभ किया जाना चाहिये ।

भाषा विकास शृंखला की पुस्तकों के पीछे नजरिया यह है कि भाषा के समर्थ उपयोग की क्षमताएं प्राप्त करने के लिए खूब पढ़ना, पढ़ने में आनंद लेना एवं पढ़े हुए पर विचार करना एवं तद्जनित विचारों को लिखकर अभिव्यक्त करना आवश्यक भी है और यथेष्ठ भी । अत: इस शृंखला की रचनायें बच्चों के अपने आप पढ़ने, उन पर विचार करने एवं सृजनात्मक लेखन के अवसर बनाने के लिए प्रयोग करने के लिए हैं । ये पुस्तकें पाठ-दर-पाठ शिक्षकों द्वारा पढ़ कर अर्थ समझने के लिए नहीं, बल्कि बच्चे द्वारा पढ़ कर अपने आप अर्थ सृजित करने के बारंबार प्रयत्नों के लिए है। इसमें शिक्षक यथा- स्थान मदद अवश्य करे पर पहले बच्चे को अपने आप पढ़कर समझाने का प्रयत्न करने के लिए प्रेरित करे ।

इस सामग्री के विकास के पीछे बहुत से लोगों के प्रयत्न एवं अनुभव हैं । दिगन्तर के विद्यालयों के अनुभव एवं वहां विकसित सामग्री । वैकल्पिक विद्यालयों के लिए सामग्री विकास के प्रयत्नों में राज्य स्रोतदल के साथियों के साथ लम्बे विचार विमर्श एवं लेखन कार्य । लोकजुम्बिश से जुड़े विभिन्न लोगों के साथ विचार विमर्श आदि-आदि । सामग्री विकास यात्रा से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति का योगदान हम स्वीकार करते हैं । चाहे व्यवस्थित आलेखों के अभाव में सब का नामोल्लेख करना संभव न हो । प्रस्तुत पुस्तक इस वैचारिक ढांचे में एवं इस परंपरा की अगली कड़ी है । रूपान्तरण, प्रश्न बनाना एवं पुस्तकों का संयोजन दिगन्तर संदर्भ समूह के **विश्वंभर एवं दीनदयाल शर्मा** ने किया है । हालांकि विचार विमर्श एवं विवेचन में संपूर्ण दिगन्तर समूह की भागीदारी रही है ।

दिगन्तर के शिक्षक समूह, लोकजुम्बिश सहज शिक्षा शिक्षकों एवं वैकल्पिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं बच्चों की पुस्तकों पर प्रतिक्रिया ने दिग्सूचक का काम किया है । इस प्रकार यह सामग्री एक सतत् एवं वर्धमान शैक्षणिक चिंतन एवं व्यावहारिक अनुभव का परिणाम है एवं एक काल विशेष में इस चिंतन एवं व्यवहार की विकास की स्थिति को प्रतिबिम्बित करती है । इसमें बहुत कमियां हैं, कुछ का हमें पता है बहुत सी हमारी नजर से ओझल हैं । यह सामग्री सतत् बदलेगी, सतत् प्रायोगिक रहेगी, सतत् विकासमान बनाये रखने का प्रयत्न हम करेंगे । अत: इसकी समालोचना एवं सुधार के लिए सुझाव सविनय आमंत्रित हैं ।

रोहित धनकर

दिगन्तर

कहां क्या है ?

		पृष्ठ संख्या
1. नए वर्ष पर	कविता	1
2. सफेद दाढ़ी वाला बकरा	कहानी	4
3. छींक	नाटक	13
4. निगरानी	कहानी	23
5. बरसात	कविता	29
6. अन्याय के खिलाफ लड़ाई	जानकारी	32
7. दौ गौरेयां	कहानी	39
8. गिल्लू	संस्मरण	48
9. चांद से थोड़ी-सी गप्पें	कविता	57
10. तीन बिल्लियां	कहानी	60
11. पत्र	पत्र	71

तो जूतों में पंख लगाकर
उड़ जाने को कभी न कहता,
परियों को भी नमस्कार कर
हंसी-खुशी धरती पर रहता।

❑ **सर्वेश्वर दयाल सक्सेना**

अभ्यास

नए वर्ष पर दादा जी की
दाढ़ी यदि काली हो जाती,
नए वर्ष पर नानी जी के
गालों पर यदि लाली आती।

(क) 1. ऊपर लिखी पंक्तियों में पहला शब्द **नए** है, इसी तरह सबसे आखिर का शब्द कौनसा है? ....

2. इन सब पंक्तियों में कुल कितने शब्द हैं? गिनकर लिखो। ....

3. दूसरी और चौथी पंक्ति में सबसे आखिर में कौनसे शब्द हैं? ....

4. दूसरी और चौथी पंक्ति के अन्तिम शब्दों में क्या तुम्हें कोई समानता लगती है? ....

5. ऊपर लिखी चारों पंक्तियों को मिलाकर हम एक अन्तरा कहते हैं। इस कविता में कितने अन्तरे हैं? ....

6. सभी अन्तरों की दूसरी व चौथी पंक्ति के अंतिम शब्दों को सारणी में लिखो।

	दूसरी पंक्ति का अंतिम शब्द	चौथी पंक्ति का अंतिम शब्द	इन शब्दों में समानता
पहले अन्तरे में	जाती	आती	**ती**
दूसरे अन्तरे में			
तीसरे अन्तरे में			
चौथे अन्तरे में			
पांचवे अन्तरे में			

कविता की पंक्तियों के अन्तिम शब्दों में इस तरह की समानता को 'तुक मिलाना' कहते हैं।

इन प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखो।

(ख) 1. इस कविता का शीर्षक 'नए वर्ष पर' क्यों रखा गया है?

2. कविता में बच्चा हंसी-खुशी धरती पर कब रहना चाहता है? (पचास शब्दों में लिखो।)

3. इन पंक्तियों से तुम क्या समझते हो?

नए वर्ष पर नानी जी के
गालों पर यदि लाली आती,

(ग) 1. नया वर्ष आने पर तुम और क्या-क्या करना चाहोगे?

2. अगर सचमुच चांद में तुम्हारा स्कूल लगने लगे तो तुम क्या करोगे? वहां तक कैसे पहुंचोगे?

पाठ-2

सफेद दाढ़ी वाला बकरा

सुनने में आया है कि हमारे इसी गांव के हाजी मेंहदी का बकरा, दूसरे गांव के जमींदार मिर्जा का मेमना और हाजी कासिम का कुत्ता और मरहदी मोहम्मद हसन का बछड़ा घर से भाग गए और जंगल में जाकर एक-दूसरे के मित्र बन बैठे। इधर-उधर घूमते-फिरते, खाते-पीते वह कुछ ही दिनों में काफी मोटे हो गए थे।

एक रात वह बैठे बातें कर रहे थे।

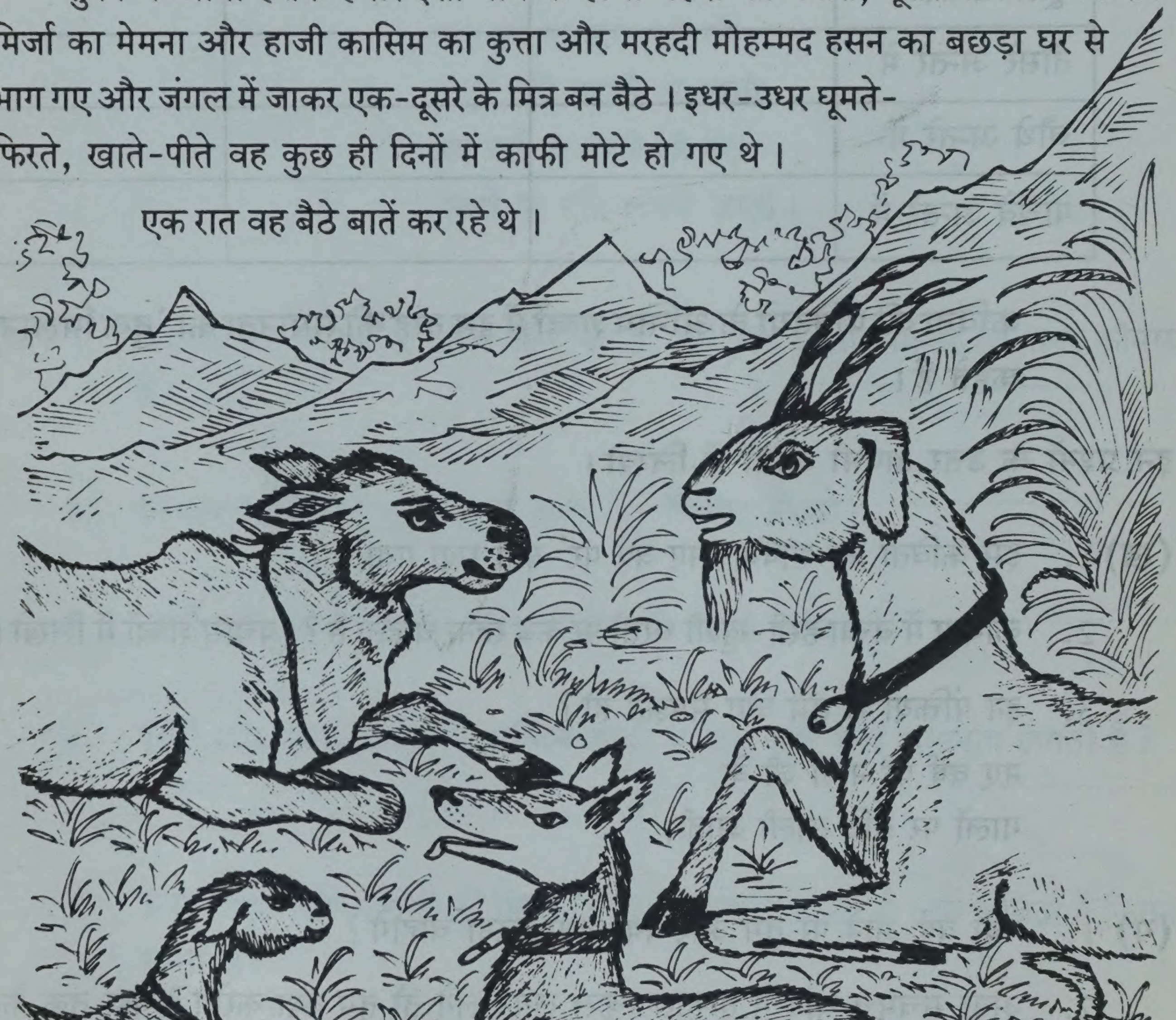

दूर से उन्हें प्रकाश नजर आया। बकरा, जिसकी दाढ़ी सफेद हो चुकी थी, बोला, ''हाय ! काश, हम हुक्का दम कर सकते।''

दूसरों ने कहा, ''यह कौन-सा मुश्किल काम है। कुत्ते साहब पानी ले आएं। बछड़े जी तम्बाकू का प्रबन्ध करें, श्रीमान् मेमने आग ले आएं, उस समय हुक्का दम हो सकता है।''

श्रीमान् मेमने खड़े हुए और आग लेने चल पड़े। चलते-चलते उस प्रकाश के समीप पहुंचे। देखते हैं वहां तो बारह भेड़ियों का एक झुण्ड बैठा हुआ है और बातों में व्यस्त है। उसके बदन में भय ने कंपकंपी पैदा कर दी। उसने उन्हें झट से सलाम किया। भेड़ियों ने पूछा, ''मित्र मेमने, तुम कहां और यह जगह कहां?''

मेमने ने डरते हुए कहा, ''मैं आप लोगों से आग लेने आया था। ताकि अपने मित्र जनाब बकरे के लिए हुक्का भर सकूं।''

भेड़ियों ने कहा, ''खैर, अभी बैठो, अपनी थकान उतार लो।''

मेमना गया और बैठ गया। एक बोला, ''किसकी प्रतीक्षा है?''

दूसरा बोला, ''सब्र से काम लो, कोई और आएगा।''

जनाब बकरे ने काफी प्रतीक्षा की मगर श्रीमान् मेमना नहीं लौटा। आंखिर बकरे ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, ''बछड़े जी, जाकर देखो श्रीमान् मेमने कहां अटक गए? कहीं किसी मुसीबत में तो नहीं फंस गए?''

बछड़े जी चलते-चलते वहीं पहुंचे। देखा, भेड़ियों के घेरे में बेचारे मेमने बैठे हैं। वह भी भय से कांपने लगा। मगर इस भय को प्रकट न किया और मेमने को जोरदार फटकार लगाई, ''उल्लू के पट्ठे, यहां बैठे-बैठे क्या कर रहे हो? आग लेने आए थे या इन श्रीमानों से गप्प मारने? या अल्लाह, जल्दी उठो, चलते हैं। बकरे भाई के हुक्के का समय निकला जा रहा है।''

भेड़ियों ने कहा, ''गुस्सा थूक दो मित्र! आओ, थोड़ा बैठो, थकान तो उतार लो।''

बछड़ा भी डर से बिना कुछ कहे उनके बीच जाकर बैठ गया। एक भेड़िया ने पूछा, ''अब किसकी प्रतीक्षा है?''

दूसरे बोले, ''मित्र, व्याकुल मत हो। अभी एक और आता है।''

जनाब बकरे ने जितना भी इन्तजार किया। न मेमना लौटा न बछड़ा। वह दुःखी हो उठा और बोला, ''कुत्ते साहब! जाकर देखो, वे लोग कहां अटक गए?''

प्रकाश के समीप जब कुत्ता पहुंचा तो यह देखकर उसके घुटने कांप उठे कि मेमना व बछड़ा भेड़ियों के बीच में बैठे गप्प मार रहे हैं। उसने कुछ प्रकट न होने दिया और चिल्लाकर बोला, ''ऐ, मैं तुम लोगों से कह रहा हूं। सुना कुछ? यहां पर दोनों बैठे हंस-हंसकर गप्प मार रहे हो, वहां जनाब बकरे आग की प्रतीक्षा कर रहे हैं? शर्म नहीं आती तुम दोनों को? उठो, दोनों आगे बढ़ो, उनका हुक्के का समय निकल रहा है।''

भेड़ियों ने कहा, ''मित्र! क्यों बेकार में क्रोध दिखा रहे हो? इन बेचारों का कोई कसूर नहीं है। आओ तुम भी थोड़ी देर आकर बैठो। थकान उतर जाए तो चले जाना।''

कुत्ते साहब भी भय के मारे इन्कार किए बिना चुपचाप अपने दोनों साथियों के समीप बैठ गए।

जब जनाब बकरे ने देखा कि कुत्ते साहब भी अटक गए तो मजबूर होकर वे स्वयं उठे और अपने साथियों की खोज में चल पड़े। रास्ते में उन्हें एक भेड़िये की खाल मिली। एक सींग तेजी से मारकर उसे सर पर उठा लिया और चल पड़े। जब प्रकाश के समीप पहुंचे तो देखा, भेड़ियों के बीच में मेमना, बछड़ा, कुत्ता फंसे बैठे हैं। भेड़ियों के मुंह से लार बह रही है। यह सब देखकर वह मित्रों पर गरजा, ''अरे मूर्खो, मैंने तुम्हें आग के लिए भेजा था और तुम यहां इनके साथ बैठे गप्पें मार रहे हो?''

भेड़ियों ने कहा, ''क्रोधित न हो मित्र बकरे! बैठो, थकान दूर करो।''

बकरे ने देखा वह बहुत बुरी तरह फंस गया है। चतुरता से काम लेना पड़ेगा। फौरन भेडियों की तरफ मुंह करके उनको बुरा-भला कहने लगा, ''गधों के बाप! बड़ी अच्छी तरह तुम्हें रंगे हाथों पकड़ा। तुम्हारे पिता बीस खालों के मेरे कर्जदार थे। सात खा चुका हूं। एक मेरी सींग पर है। तुम में से कोई भी अपनी जगह से हिलना मत क्योंकि बाकी गिनती में तुम हो जिन्हें खाकर मैं अपना हिसाब बराबर करूंगा। कुत्ते साहब पकड़ो इन्हें। भागो मत डरपोको।''

इतना सुनते ही सारे भेड़िये सर पर पैर रखकर भाग खड़े हुए। इस तरह से पलक झपकते ही वहां से गायब हुए जैसे पहले कभी वहां थे ही नहीं। कुत्ता भी तेजी से भौंककर कह रहा था, ''अभी चीर-फाड़कर तुम सब को फेंकता हूं।''

बकरे ने मित्रों को लिया। आगे बढ़ा और कहा, ''कहीं भेड़िये लौट न आयें। चलो, कहीं छुप जाते हैं।''

एक वृक्ष टेढ़ा-मेढ़ा-सा थोड़ा झुका-सा था। बकरा उस पर चढ़कर सबसे ऊपर की शाख पर जाकर बैठ गया। उसके नीचे कुत्ता, कुत्ते के नीचे मेमना और बछड़े ने जितनी भी कोशिश की पेड़ पर चढ़ने की, मगर ज्यादा ऊपर चढ़ नहीं पाया। बड़ी कठिनता से किसी प्रकार वहीं टहनी में छुपकर बैठ गया।

भेड़िये दौड़ते-दौड़ते जब थक गए तो सुस्ताने के लिए ठहर गए। उनमें से एक बोला, ''देखो तो मैं क्या कहना चाह रहा हूं - कहां बकरा और कहां भेड़िये? मगर बकरे ने हमें धमकाकर कहां तक भगा दिया है? चलो, लौटते हैं और छठी का दूध उन्हें याद दिलाते हैं। क्या समझ रखा है उस बकरे ने अपने आपको?''

भेड़िये लौटे और बकरे व साथियों को ढूंढा। मगर उन्हें वे कहीं नजर न आए। थककर वह उसी वृक्ष के नीचे बैठ गए और भविष्य-फल देखने लगे। उनमें से एक भेड़िया ज्योतिषी भी था। वह देखने लगा कि बकरे व उसके मित्र कहां छुपे हैं। तभी बछड़ा अपने को टहनियों के बीच संभाल न सकने के कारण धड़ाम से एक भेड़िये के सर पर आ गिरा। यह सब देखकर बकरे के हाथों के तोते उड़ गए। सोचा कि अब तो सब गुड़-गोबर हो गया। मगर अपने को संभालकर वह चीखा, ''बछड़े जी! सबसे पहले उस पाखंडी ज्योतिषी को पकडें ताकि वह भाग न सके। जल्दी साथियो! सबको पकड़ो।''

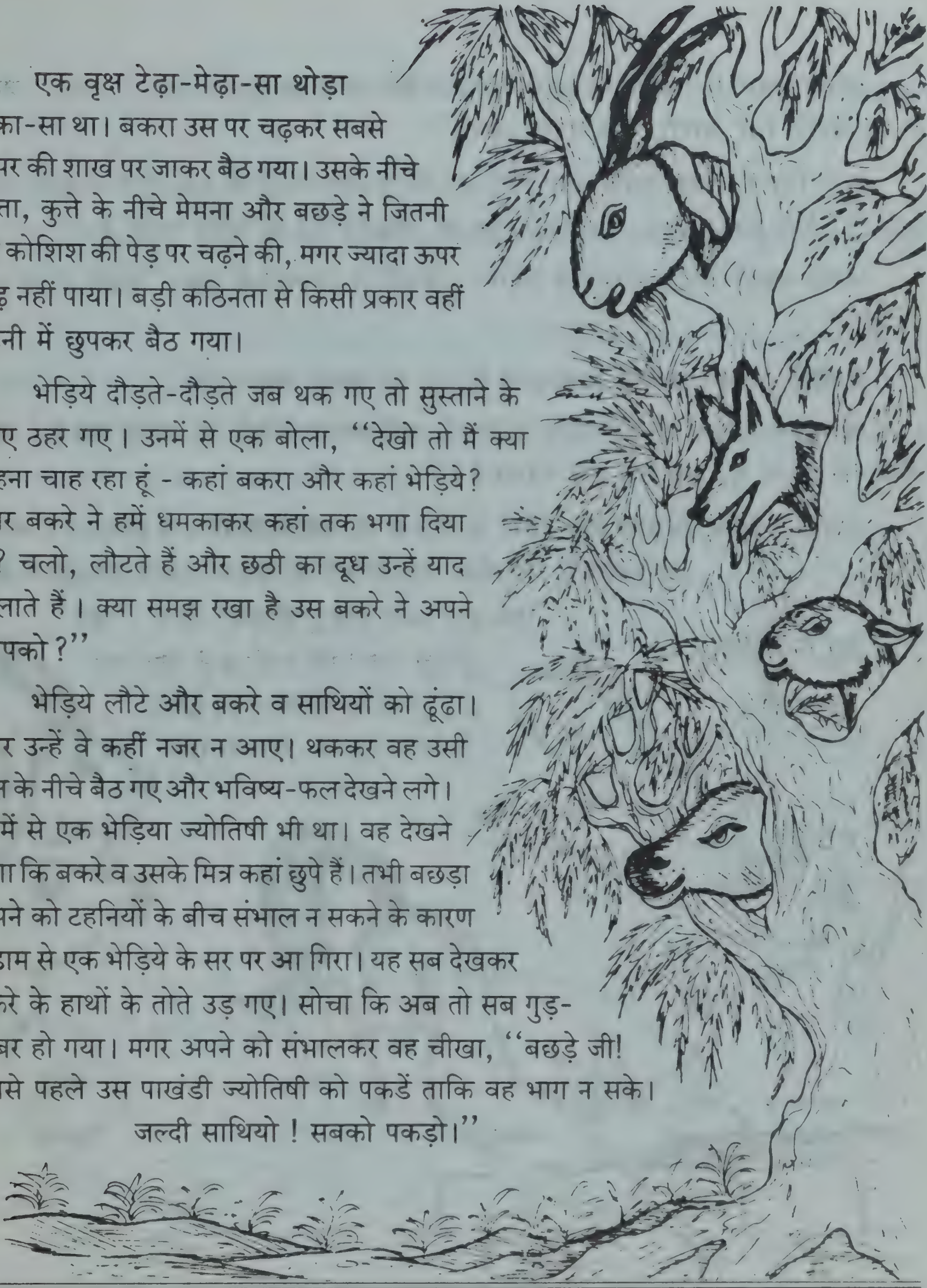

भेड़िये दोबारा फिर सर पर पैर रखकर ऐसे भागे जैसे गधे के सर से सींग। बकरे ने कहा, ''जानते हो,यह भेड़िये फिर आएंगे, कुछ करना पड़ेगा।''

सबने मिलकर गड्ढा खोदा और उसमें कुत्ते को गाड़कर मिट्टी से ढक, कुछ जली ईंटें ऊपर सजा दीं। फिर बकरा बोला, ''साथियो, यह श्री काकला पीर की पवित्र मजार है।''

भागते-भागते भेड़िये लोमड़ी से टकराए। लोमड़ी ने आश्चर्य से पूछा, ''इतनी जल्दी काहे की है?''

वे बोले, ''बकरे के भय से भाग रहे हैं। वह हमें खाना चाहता है।''

लोमड़ी ने कहा, ''तुम्हें बेवकूफ बनाया है, कहीं बकरा भेड़ियों को खा सकता है? चलो लौटो, मैं जानती हूं, उन्हें कैसे पाठ पढ़ाना है?''

लोमड़ी ने इतना समझाया कि भेड़ियों के दिल से डर-भय जाता रहा। वे लौट पड़े। आगे-आगे लोमड़ी और पीछे-पीछे भेडियों को देखकर बकरा पल-भर में ही सब-कुछ समझ गया। चीखकर बोला, ''वाह लोमड़ी वाह! मेरे बाकी कर्ज लौटा रही हो? तुम्हारे स्वर्गीय पिता 24 खालों के मेरे कर्जदार थे। दो हफ्ते पहले

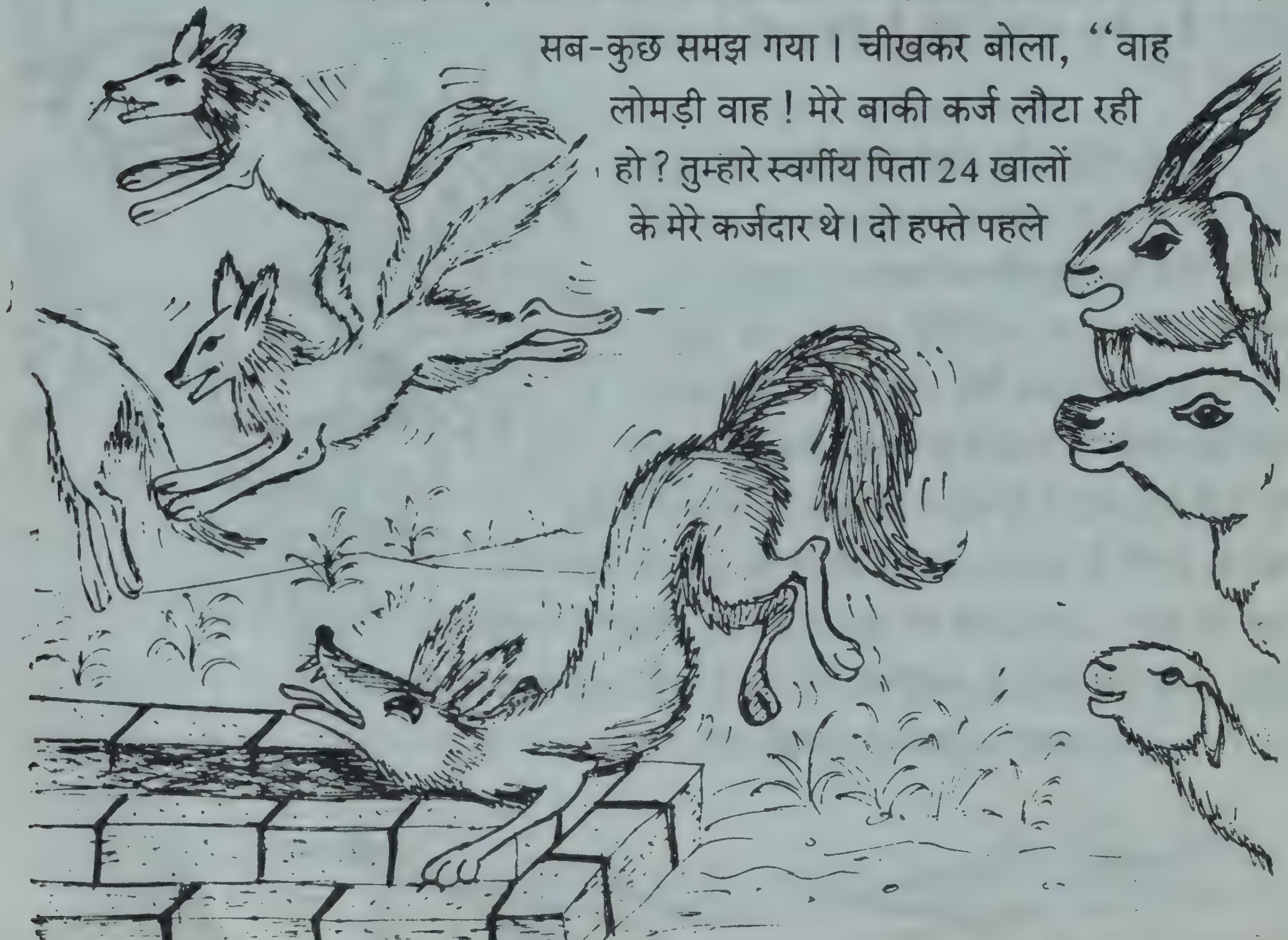

12 भेड़िये लाई जिन्हें मैंने खाया था। अब फिर पहले की तरह बारह और ले आई हो ? शाबाश! -- शाबाश !!''

भेडियों ने कहा, ''कहीं लोमड़ी हमें धोखे से तो नहीं लाई है यहां ?''

लोमड़ी बोली, ''गधे ने कहा बेवकूफ ने विश्वास किया। नहीं जानते हो तुम लोग इन चतुर-चंडालों को ?''

बकरा बोला, ''लोमड़ी ! अगर तुम सच कहती हो तो आओ इस पवित्र मजार पर हाथ रखकर कसम खाओ कि मेरी कर्जदार नहीं हो तुम ? इस कसम के बाद मामला समाप्त समझो।''

लोमड़ी सीधे मजार पर पहुंची और उस पर हाथ रखकर बोली, ''अगर झूठ बोलूं तो इस 'पीर' के क्रोध से नष्ट हो जाऊं।''

जैसे ही लोमड़ी ने यह शब्द कहे, कुत्ता गड्ढे से निकला और लोमड़ी की गर्दन पकड़ ली और उसका दम घुट गया। भेड़िये यह देखकर फिर भाग खड़े हुए। इस बार जंगल के उस पार।

अब पौ फट रही थी। बकरा बोला, ''मित्रो ! मेरा विचार है कि हम सब अपने-अपने घर लौट जाएं वरना यह जंगली पशु हमें जीने नहीं देंगे।''

सबने जनाब बकरे की बात को ध्यान से सुना, उसे पसन्द किया और उचित समझा। सब अपने-अपने गांव में स्थित अपने घर लौट गए।

❑ **समद बहरंगी**

● फारसी से अनुवाद : नासिरा शर्मा

अभ्यास

(क) शब्दों के अर्थ याद करो।

शब्द		अर्थ
प्रबन्ध	-	इंतजाम, व्यवस्था करना
प्रतीक्षा	-	इन्तजार
व्याकुल	-	उतावला, अधीर, बेताब

ज्योतिषी	-	आगे की बात बताने वाला, ज्योतिष-शास्त्र जानने वाला
पाखंडी	-	ढोंगी, दिखावटी
पीर	-	बुजुर्ग, महात्मा, मुसलमानों के धर्म गुरू
चतुर-चांडाल	-	चालाक, बदमाश

प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखो।

(ख) 1. घर से कौन-कौन से जानवर जंगल में भाग गये थे?

2. भेड़ियों की संख्या कितनी थी?

3. भेड़ियों ने मेमने को क्यों बिठा लिया?

4. भेड़ियों के मुंह से लार क्यों गिर रही थी?

(ग) 1. बछड़े, कुत्ते और मेमना के जाने के बाद जब बकरा भी भेड़ियों के पास गया तो उसने अपने साथियों से क्या कहा?

2. लोमड़ी ने डरकर भागते हुए भेड़ियों से क्या कहा?

3. बकरे ने किस तरह आखिर में लोमड़ी और भेड़ियों को बेवकूफ बनाया। (पिचहत्तर शब्दों में लिखो ।)

(घ) 1. नीचे लिखे वाक्यों को पढ़कर समझो फिर उत्तर लिखो -

वाक्य	किसने खिलाया?	किसको खिलाया?
(1) मांगीलाल ने सुमन को खाना खिलाया।		
(2) दादाजी ने गांव वालों को खाना खिलाया।		

वाक्य	किसने कहा?	किसको कहा?
(3) लोमड़ी ने भेड़िये से कहा -		
(4) शिक्षक ने बच्चों से कहा -		

समझो - ऊपर पहले वाक्य में खाना खिलाने का काम हो रहा है। और उस काम को करने वाला मांगीलाल है। इसी तरह दूसरे वाक्य में भी खाना खिलाने का काम हो रहा है, इसमें खिलाने वाले (काम करने वाले) दादाजी है।

2. अब बताओ। (शिक्षक मदद करे)

   (1) तीसरे और चौथे वाक्य में क्या काम हो रहा है?

   ....

   (2) इस काम को करने वाले कौन-कौन हैं?

   ....

किसी भी काम को करने वाले को हम कर्ता कहते हैं।

3. अब तुम नीचे लिखे वाक्यों में से कर्ता को ढूंढकर लिखो। फिर उस वाक्य में होने वाले काम को लिखो।

वाक्य	कर्ता	होने वाला काम
(1) बकरे ने भेड़ियों को डराकर भगा दिया।		
(2) बकरे ने सबसे कहा-		
(3) नफीसा ने खाना खाया।		
(4) मोहन ने बकरी का दूध निकाला।		
(5) कुत्ते ने लोमड़ी की गर्दन पकड़ ली।		

(ङ) निम्न मुहावरों के अर्थ याद करो -

(1) उल्लू का पट्ठा	बेवकूफ
(2) गुस्सा थूकना	क्रोध दूर करना
(3) छठी का दूध याद दिलाना	बहुत कष्ट में फंसना
(4) गुड़-गोबर होना	बना बनाया काम बिगड़ जाना
(5) हाथों के तोते उड़ना	बहुत घबरा जाना

(च) 1. ऊपर लिखे मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो।

उदाहरण- 1. ''गुस्सा थूक दो''
चलो जो हो गया सो हो गया अब ''गुस्सा थूक दो'' मित्र।
....
....
....

उदाहरण- 2. ''गुड़–गोबर होना''
तुमने यहां आकर सब काम ''गुड़-गोबर'' कर दिया।
....
....
....

2. यदि बकरे को हुक्का पीने की इच्छा नहीं होती तो यह कहानी आगे कैसे बढ़ती ? सोचकर लिखो।

पाठ-3

छींक

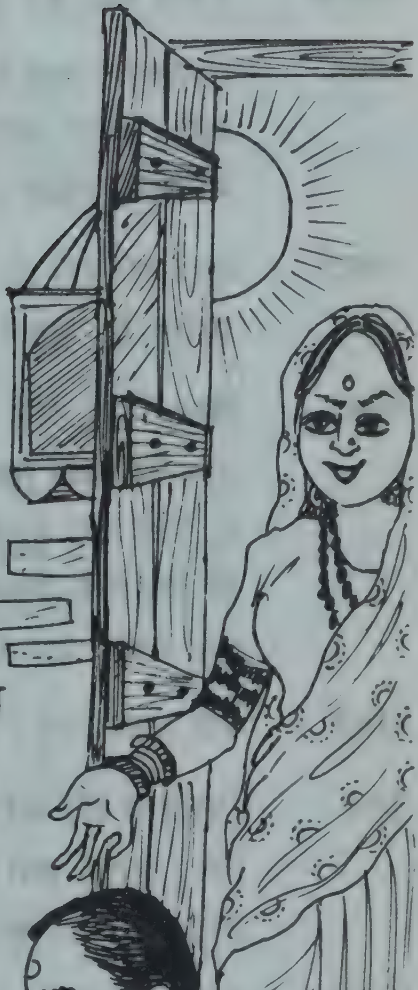

(पंचम मिसिर का घर। प्रातः का समय है। वे सो रहे हैं। उनकी पत्नी गायत्री उन्हें जगाने की चिंता में है। नेपथ्य में जोर से एक छींक होती है। दस सेकेण्ड बाद दूसरी होती है।)

गायत्री : (पंचम मिसिर को जगाते हुए) अरे, आज क्या सोते ही रहोगे ? सात बज गए, इतना दिन चढ़ आया।
(पंचम मिसिर आलस भरे स्वर में अंगड़ाई लेते हैं।)
कल कह रहे थे, मुझे यह काम करना है, वह काम करना है। सात-सात बजे तक सोकर काम करोगे ?

पंचम : (जम्हाई लेकर अलसाए स्वर में)
जय जय जय नटवर गिरधारी।
दिन भर राखो लाज हमारी॥

गायत्री : (उसी स्वर में) कुंभकरन जी की बलिहारी।

पंचम : (अलसाए स्वर में) ऐं, क्या कहा ? सुन नहीं पाया। हां, तुम भी मेरे साथ प्रार्थना किया करो। (फिर अंगड़ाई लेकर) ओह ! क्या दिन निकल आया ? आज बड़ी जल्दी सूरज भगवान निकल आए।

गायत्री : सूरज भगवान तो अपने समय पर ही निकलते हैं। तुम्हारी नींद तो जैसे कुंभकरन की धरोहर है, खुलने का नाम ही नहीं लेती।

पंचम : शिव, शिव, धीरे-धीरे उठ रहा हूं, भाई। जरा उठने दो। आज जरा कुछ नींद लग गई, तो सबेरे-सबेरे तुम सत्यनारायण की कथा बांचने लगीं। अभी उठता हूं, हाथ-मुंह धोता हूं, फिर जरा मुहूर्त देखकर निकलूंगा, तो देख लेना तुम्हारे द्वार पर सोना न बरसा दूं तो मेरा नाम पंचम मिसिर नहीं। (सहसा) अरे हां, त्रिवेनी की मां। मैं तो कहना ही भूल गया। रात में ऐसा बढ़िया सपना देखा है कि बस...उछल पड़ो।

गायत्री : क्या उछल पड़ूं ? यही कहोगे कि सपने में सुनार की दुकान पर गया था।

पंचम : (प्रसन्नता से) अरे त्रिवेनी की मां ! सुनार की दुकान क्या है उसके सामने। मैंने देखा कि...अहह, क्या देखा कि बस देखते ही रहो, तुम मुझे न जगातीं तो हाय, हाय, मैं कहां से कहां पहुंच जाता !

गायत्री : चारपाई पर पड़े-पड़े ?

पंचम : अरे, हंसी समझती हो, त्रिवेनी की मां। अरे, मैंने वह देखा कि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी नहीं देख सकते।

गायत्री : सो क्या देखा ? मैं भी तो सुनूं।

पंचम : सुनाऊं ? मैंने देखे हैं, विष्णु भगवान। अहह ! क्या सीन था - विष्णु भगवान शेषनाग पर सो रहे हैं। साक्षात लक्ष्मी जी उनका पैर दबा रही हैं। तो, मैं दूसरी तरफ से पहुंचा और दूसरा पैर दबाने लगा। विष्णु भगवान ने मेरी तरफ देखा और पूछा, "क्या चाहते हो, पंचम मिसिर ?" मैंने कहा, "हे दीनबंधु ! दीनों के रखवाले। मैं यही चाहता हूं कि लाला हरिकिशनदास की लड़की जानकी की शादी मनोहरलाल के लड़के से लगा दूं।"

गायत्री : वाह, तुमने विष्णु भगवान से क्या मांगा? अरे, सोना, चांदी, कुछ मांगते!

पंचम : अरे त्रिवेनी की मां, हरिकिशनदास की लड़की जानकी की शादी तो एक बहाना है बहाना! इस शादी के लगाने से घर में इतनी लक्ष्मी आएगी कि दो साल बाद त्रिवेनी की शादी कर लेना।

गायत्री : अच्छा, तो विष्णु भगवान ने क्या कहा?

पंचम : उन्होंने गणेश जी को बुलाया और उनके चूहे पर मुझे बिठाया।

गायत्री : चूहे पर बिठाया?

पंचम : हां, हां, साक्षात चूहे पर बिठाया। गणेश जी का चूहा कोई मामूली चूहा तो नहीं था? वह था एक बड़े हाथी के बराबर...जैसा हाथी हरिकिशनदास का है न!

गायत्री : फिर?

पंचम : फिर जैसे ही मैं चलने को हुआ लक्ष्मी जी ने बड़े जोर से छींका।

गायत्री : लक्ष्मी जी ने?

पंचम : हां, हां साक्षात लक्ष्मी जी ने मुंह फेरकर ऐसे जोर से छींका कि...

गायत्री : अरे, वो तो सम्पत ने छींका था, जब तुम सो रहे थे।

पंचम : सम्पत ने? नहीं, मुझे तो ऐसा मालूम हुआ कि साक्षात लक्ष्मी जी ने छींका था।

गायत्री : नहीं, सम्पत ने छींका था।

पंचम : इस सम्पत को छींकने की क्या जरूरत पड़ गई? मेरे जगने में छींके तो छींके, मेरे सोते में भी छींकता है?

गायत्री : छींक आ गई होगी।

पंचम : ऐसे कैसे आ गई होगी? छींक अच्छी नहीं होती, त्रिवेनी की मां, उससे बड़े-बड़े राज उलट जाते हैं।

गायत्री : पर खैर, तुम्हारा राज तो नहीं उलटा?

पंचम : उलटे या न उलटे, पर उसे देख लूंगा, हां।

गायत्री : अच्छा तो बाद में देख लेना, अभी तो उठो।

पंचम : देखो त्रिवेनी की मां। मैंने रात में पंचांग देख लिया है। हरिकिशनदास के यहां जाने का मुहूर्त नौ बजकर पन्द्रह मिनट पर है। अभी काफी देर है। पर मैं इस गधे सम्पत को देखना चाहता हूं। (पुकारते हुए) सम्पत, सम्पत।

सम्पत : (बाहर से) जी, पंडित जी।
(प्रवेश)

पंचम : क्यों रे, कल मैंने तुझसे क्या काम करने को कहा था?

सम्पत : पंडित जी, आपने कहा था कि चूहेदानी में नेवला पकड़कर रख लेना।

पंचम : तो चाहे मुझे सपने में चूहा दिख जाए, लेकिन चूहेदानी में तुझसे नेवला पकड़ते नहीं बनेगा।

गायत्री : चूहेदानी में नेवला?

पंचम : हां, चूहेदानी में नेवला। नेवला शकुन की चीज है। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि घर से चलते समय अच्छा शकुन होना चाहिए। नेवले का देखना अच्छा शकुन माना जाता है। मैंने सम्पत से कहा कि चूहेदानी में नेवला पकड़ लेना और चलते वक्त मुझे दिखा देना।

गायत्री : शकुन का अच्छा इन्तजाम किया आपने!

पंचम : तो क्यों रे, तूने चूहेदानी में नेवला पकड़ा?

सम्पत : जी...जी...नेवला आया ही नहीं। मैंने कई बार पिंजरे में रोटी डाल-डालकर नेवले को दिखाया, पर वह आया ही नहीं।

पंचम : तो तेरी तरह नेवले के दिमाग भी चढ़ गए हैं? कमबख्त समझते हैं कि उनका देखना शकुन है, तो नखरे दिखलाते हैं। पंचांग में इन कमबख्तों का दिखना अपशकुन माना जाए, तब तो बात है।

सम्पत : ऐसा जरूर कर दीजिए, पंडित जी।

पंचम : (चिढ़ते हुए) ऐसा जरूर कर दीजिए, पंडित जी। और हां, तूने देवीदीन ग्वाले से कह दिया है कि जब मैं घर से चलूं तो गाय और बछड़ा लेकर मेरे सामने दूध दुह दे?

सम्पत : देवीदीन से कह तो दिया है।

गायत्री : तो क्या यह भी कोई शकुन है?

पंचम : पंचम मिसिर की पत्नी होकर इतना भी नहीं जानती कि यह कार्यसिद्धि का सबसे बड़ा शकुन है? और हां, तुमने दही मंगा लिया है?

गायत्री : वह तो घर में ही है।

पंचम : बस, तो ठीक है, मैं उसे खाकर जाऊंगा। सम्पत, बाहर जाकर देख कि अभी देवीदीन तो नहीं आया?

सम्पत : बहुत अच्छा, पंडित जी। (बाहर जाता है)

पंचम : बात यह है, त्रिवेनी की मां, कि हमारे शास्त्रों और पुराणों में जो कुछ लिखा है, वह झूठ थोड़े ही हो सकता है।

सम्पत : (आकर) पंडित जी। अभी देवीदीन नहीं आया।

पंचम : जब आए तब मुझे खबर देना, समझे? अब मैं उठता हूं।

(उठते ही सम्पत जोर से छींकता है।)

पंचम : (उबलकर) इस गधे ने फिर छींका। क्यों बे सम्पत लगाऊं दो तमाचे?

सम्पत : मेरा कोई कसूर नहीं, पंडित जी।

पंचम : तो किसका है? मेरा है? मैंने छींका? देखो त्रिवेनी की मां। मैं उठा और इसने छींका। यह सम्पत ऐन मौके पर छींकता है, मैं इस गधे की नाक काट डालूंगा, हां। गणेश जी की सूंड की तरह नाक बढ़ा ली है। जब देखो तब छींक। जब देखो तब छींक।

गायत्री : (हंसकर) कहीं गणेश जी की नाक छींकने से तो नहीं बढ़ गई है।

पंचम : ऐसी बात कहकर तुम मेरा गुस्सा दूर करना चाहती हो ? मैं जानता हूं । लेकिन यह छींक अच्छी नहीं होती, मैं बता देता हूं ।

गायत्री : जा रे सम्पत, बाहर जा ।
(सम्पत बाहर जाता है)

पंचम : मैं जानता हूं, तुम उसको बचाना चाहती हो ।

गायत्री : तो मैं यह जानना चाहती हूं कि छींक की बात किस पुराण में लिखी है ?

पंचम : छींक की बात जलपुराण में लिखी है ।

गायत्री : जलपुराण में ?

पंचम : क्यों, क्या तुम्हें शक है ? अरे, हमारे यहां बहुत से पुराण है। अग्निपुराण, वायुपुराण हैं तो एक जलपुराण भी है ।

गायत्री : पर जलपुराण का नाम तो कभी सुना नहीं ।

पंचम : तो सुना तुमने किस-किस का नाम है ? अरे इतना नहीं समझतीं कि जब तीन लोक के जानने वाले हमारे ऋषि-मुनियों ने अग्निपुराण लिखा, वायुपुराण लिखा तो क्या जलपुराण न लिखा होगा ?

गायत्री : नहीं जरूर लिखा होगा, पर जलपुराण का छींक से क्या सम्बन्ध है ?

पंचम : अरे जल के देवता कौन हैं ? वरूण भगवान । और वरूण भगवान का स्थान है नाक, इसीलिए छींक में नाक से पानी निकलता है, इसीलिए हमारे ऋषि-मुनियों ने छींक का वर्णन जलपुराण में किया है ।

गायत्री : ठीक है । अब बात समझ में आई । और पंडित आपकी तरह न समझा पाते होंगे ।

पंचम : किसी ने इतना पढ़ा भी है, जितना मैंने पढ़ा है ?

गायत्री : तो उठो, फिर जल्दी से तैयार हो जाओ । सेठ जी के यहां जाने का समय हो रहा है ।

पंचम : अच्छी बात है, उठता हूं ।
(बाहर से देवीदीन पुकारता है)

देवीदीन : पंडित जी महाराज!

पंचम : अब यह कौन आ गया? आज उठना भाग्य में नहीं बदा है। (जोर से) कौन है?

देवीदीन : मैं, पंडित जी महाराज! मैं, देवीदीन। सम्पत भैया कह रहे कि भिनसार गइया और बछ्या लेके हमारे घर के समनवां दुहि जायो। कौनौ हमार गइया कानी हौद में कइ दीन हैं। अब गइया तो आइ नहीं सकत। आज्ञा होई तो भैंस लाइ के दुहि देई। पर आपको सगर दूध लेइ पड़ी।

पंचम : नहीं, उसे लाने की जरूरत नहीं। आज दूध नहीं लगेगा। (अपने आप से) अच्छा शकुन रहा, गाय के बदले भैंस।

देवीदीन : जैसी मरजी, पालागी। (अपने आप से) ऐसे ने पंडित जी बना है। आपन जेब में रूपैया धरे होई हैं, पर गरीब की मदद नाही कइ सकत हैं।

पंचम : क्या कह रहे हो, देवीदीन?

देवीदीन : कुछै नहीं पंडित जी (जोर से छींकता है) ई छीं...

पंचम : सुबह-सुबह छींकता क्यों है?

देवीदीन : का बताई पंडित जी। आपके बगलिया मां कौनौ मरिचा पिसाई रहा है। ओईसे जौने का देखो तौन छींकत है। अब ही सम्पत भैया छींकत रहे। आ क् छीं।

(देवीदीन छींकता है। सम्पत का दौड़ते हुए प्रवेश)

सम्पत : पंडित जी (पंडित जी कहते ही उसको जोर से छींक आती है।)

पंचम : ठहर, आज मैं तेरी छींक निकालता हूं। अरे, मुझे भी छींक आ रही है। एं, ये छीं...आक् छीं। आक्...छीं।

(पर्दा गिरता है)

❑ **डॉ. रामकुमार वर्मा**

अभ्यास

(क) 1. इस पाठ का पहला वाक्य है ''पंचम मिसिर का घर।''

इसी तरह दूसरा वाक्य है ''प्रातः का समय है।''

इसी तरह तीसरा वाक्य है ''वे सो रहे हैं।''

अब तुम पाठ में से तीसरे वाक्य से आगे के तीन वाक्यों को देखकर नीचे लिखो।

चौथा वाक्य ....

पांचवां वाक्य ....

छठा वाक्य ....

2. अब नीचे लिखे शब्दों में से कोई भी शब्द चुनकर चार अलग-अलग वाक्य बनाकर लिखो।

विष्णु, भगवान, सपना, सुनार, आया, को, फेरकर, बैठ, लक्ष्मी, मुंह, गई, वह, घर, में, तो, हैं।

जैसे : सुनार को सपना आया। (इस वाक्य में चार शब्द लिए गये हैं।)

....

....

....

....

3 नीचे लिखे अधूरे वाक्यों को पाठ में से ढूंढकर पूरा करो।

(क) आज उठना भाग्य में ....।

(ख) छींक की नात ....।

(ग) क्यों बे सम्पत लगाऊं .... ?

(घ) .... में नेवला ?

(ड़) .... की नाक छींकने से तो नहीं बढ़ गई है।

प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखो।

(ख) 1. जम्हाई लेकर अलसाए स्वर में पंचम ने क्या कहा ?

2. पंचम ने जलपुराण का छींक से क्या संबंध बताया ?

3. पंचम ने कहा, "सुबह-सुबह छींकता क्यों है?" इस पर देवीदीन ने क्या कहा?

4. पंचम को भी अंत में छींक क्यों आने लगी?

5. छींक से क्या होता है? पंचम मिसिर ने क्या बताया?

(ग) 1. पंचम ने सपने में क्या-क्या देखा?

2. पंचम ने भगवान विष्णु से सोना, चांदी, रूपया क्यों नहीं मांगा?

(घ) 1. क्या किसी दूसरे के छींकने से या शकुन-अपशकुन देखने से कोई काम बनता-बिगड़ता है? तुम्हें नाटक को पढ़कर क्या लगता है?

2. लोग और किन-किन बातों को शकुन-अपशकुन मानते हैं? जैसे "बिल्ली द्वारा रास्ता काटना।" ऐसी कोई चार-पांच बातें और लिखो।

3. तुम इन पर क्या सोचते हो? शकुन की बात मानना ठीक है या गलत? क्यों?

पाठ-4

निगरानी

एक जमींदार था। पूरा अफीमची। एक बार में तोलाभर अफीम गटक जाता । रात-दिन नशे में चूर रहता। एक दिन जमींदार के चहेते ने कहा, "महाराज आपका स्वास्थ्य दिन-ब-दिन गिरता जा रहा है । आप अस्वस्थ नजर आते हैं ।"

जमींदार को बड़ी चिंता हुई । उसने सलाह मशविरा के लिए पुरोहित, चारण और नाई को बुलवा भेजा । जमींदार की चिन्ता से सभी बड़े चिंतित हुए । कारण क्या हो सकता है सभी सोचने लगे ।

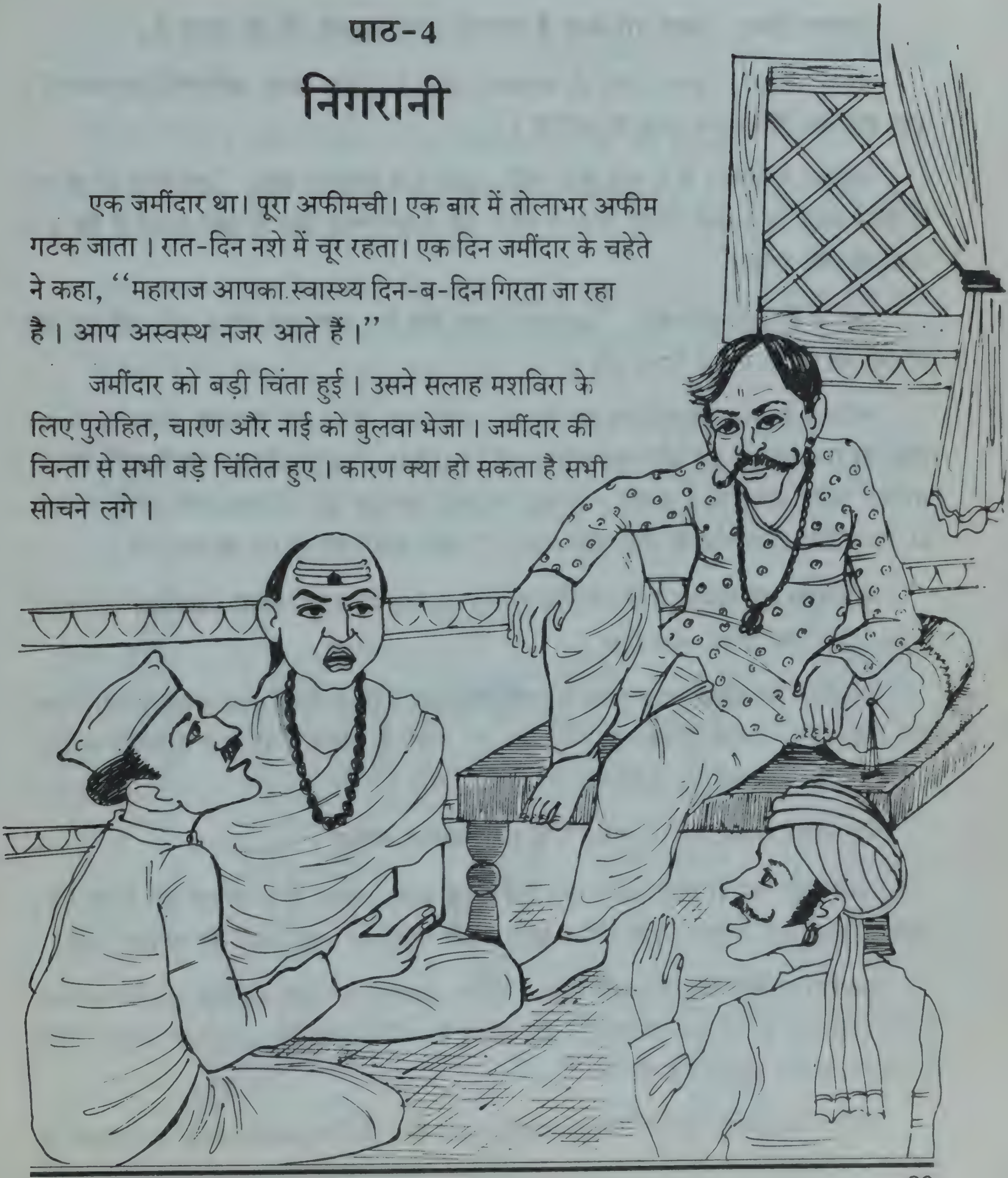

पुरोहित बोला, “नशा बुरी बला है महाराज। यह आदमी को खा जाता है।”

चारण ने कहा, “हुजूर, नशा तो खानदानी शौक है। आप थोड़ा खाने-पीने पर ध्यान दें। कुछ दूध-वूध पीयें। सब ठीक हो जायेगा।”

जमींदार के दिमाग में ये बात कुछ जमीं। उसने कुछ सोचकर कहा, “दूध पीना तो दूर दूध के दर्शन किये ही न जाने कितने दिन हो गये। नशे में कमबख्त नींद ही ऐसी आती है कि कुछ ध्यान ही नहीं रहता।”

इतने में ही नाई बोल पड़ा, “अन्नदाता, बात ठीक है। आप एक नौकर क्यों नहीं रख लेते जो रात को ध्यान से दूध पिला सके।”

जमींदार के पास बेशुमार धन सम्पत्ति थी। उसने एक नौकर इसी काम के लिए रख लिया। नौकर हर रोज एक सेर दूध औटाकर जमींदार को पिला देता। रोजाना औटाया दूध पिलाते-पिलाते आखिर उसका मन काबू में न रहा। वो नजर बचाकर पाव दूध खुद पी जाता और बाकी जमींदार को पिला देता। जमींदार के पास ऐसी बातों का ध्यान रखने की फुरसत ही कहां थी।

चुगलखोर इसी फिराक में थे। उन्होंने जमींदार के कान भरना शुरू किया। जमींदार ने निगरानी के लिए एक और नौकर लगा दिया।

नये नौकर ने आते ही पुराने नौकर से हाल-चाल पूछे। पुराना नौकर दुखी होकर बोला, “क्या हाल क्या चाल”। बड़ी मुश्किल है। एक सेर दूध आता है। पाव मैं पी लेता हूं बाकी जमींदार को पिला देता हूं। अब दो में कितना-सा पांती आयेगा।”

नया नौकर बोला, “चिन्ता मत करो सब ठीक हो जायेगा।”

अगले ही दिन से दोनों आधा दूध खुद गटक जाते। आधा दूध जमींदार को पिला देते। जमींदार अपने नशे में डूबा रहता। फिर छोटी-छोटी चीजों पर नजर रखने की फुरसत किसे!

कुछ दिन तो सब ठीक-ठाक चलता रहा। लेकिन चुगलखोरों से कहां रहा जाए। उन्होंने जमींदार से फिर शिकायत की, “जरा देखिए तो, क्या हालत हो गयी है हुजूर की। हड्डियां निकल आयी हैं। केसर-सा रंग काला पड़ गया है।”

जमींदार ने सोचा, ‘शायद ये नौकर गड़बड़ करते हों।’ इसलिए उन्होंने दोनों पर निगरानी के

लिए एक और नौकर तैनात कर दिया। सोचा, अब कैसे गड़बड़ करेंगे? तीसरा नौकर उन दोनों का भी बाप निकला।

तीसरे नौकर ने आते ही पूछा, ''तुम दोनों इतने उदास क्यों बैठे हो?''

उन्होंने बताया, पहले ही सेर दूध आता है। आधा जमींदार को पिला देते हैं। बचा आधा। वह हम दोनों का। अब तुम भी आ गये हो।

तीसरे नौकर ने कहा चिन्ता मत करो। सब ठीक हो जायेगा। मेरी अकल पर भरोसा करो। अगले ही दिन से दूध के चार हिस्से होने लगे। तीन नौकरों के और एक जमींदार का। जमींदार तो नशे में चूर रहता उसे कहां फुरसत ध्यान देने की।

अब तो गांव के लोगों को भी ताज्जुब होने लगा। उनकी समझ नहीं आ रहा था। कि जमींदार को दूध पिलाने के लिए तीन-तीन नौकर हैं। पर जमींदार की सेहत वही की वही। आखिर उन्होंने जमींदार से पूछ ही लिया, ''महाराज, क्या राज है। तीन-तीन नौकर हैं। पर

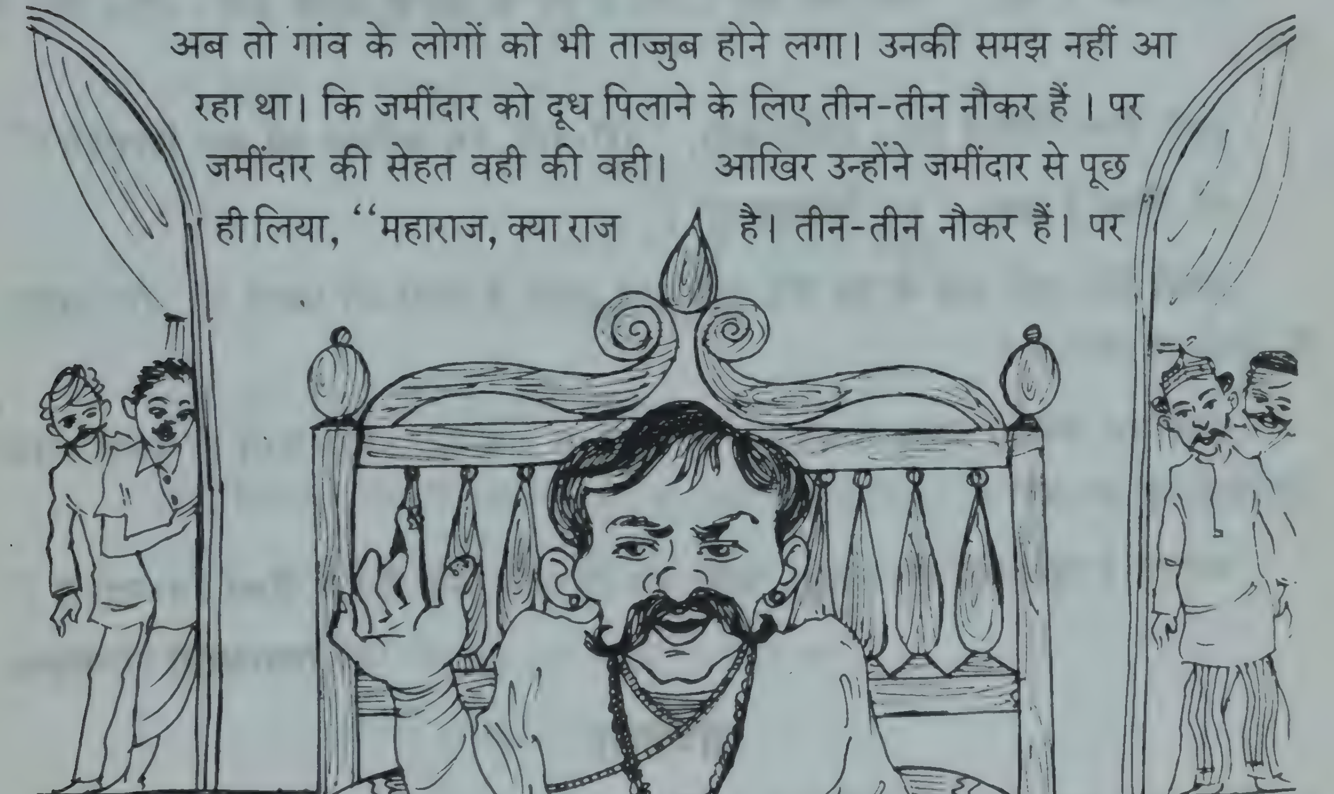

नतीजा, वही ढ़ाक के तीन पात। आपकी सेहत वही की वही है। कोई गड़बड़ जरूर है।''

जमींदार को भी बात कुछ जंची। गड़बड़ जरूर है। उसने एक और नौकर निगरानी के लिए रख लिया।

चौथा नौकर भी उसी थैली का चट्टा-बट्टा निकला। उसके आते ही पहले वाले नौकर मुंह लटकाकर बैठ गये।

नये नौकर ने पूछा, ''भाई, क्या हुआ। तुम इतने चिंतित क्यों हो?''

पुराने नौकरों ने सारा हाल कह सुनाया।

नये नौकर ने कहा, ''चिंता मत करो। कल से दूध के चार ही हिस्से करो। अपन चारों के लिए।''

पुराने नौकर चिंतित हुए। उन्होंने कहा, ''नहीं-नहीं, हम जमींदार को क्या पिलायेंगे?''

नये नौकर ने कहा, ''तुम निश्चिंत रहो।''

अगले दिन चारों ठाठ से दूध पीने लगे। नये नौकर ने थोड़ी-सी मलाई ली और जमींदार की मूंछों पर लगा दी।

सुबह जब जमींदार जागा तो उसने अपनी मूंछों पर हाथ फेरा। हाथ फेरते ही मलाई उसकी अंगुलियों पर आ गयी।

जमींदार ने खुश होते हुए कहा, ''वाह! दूध तो आज पिया है। ये नौकर ईमानदार है।''

❑ राजस्थानी लोककथा

अभ्यास

प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखो।

(क) (1) चारण ने जमींदार को क्या राय दी?

(2) चौथे नौकर ने पुराने नौकरों से मिलकर क्या चाल चली?

(3) जमींदार के हिस्से का दूध नौकर क्यों पी जाते थे?

(ख) (1) नशे में चूर रहने वाले जमींदारों और ऐसे 'नशे में चूर' लोगों का अंत में क्या हाल हो जाता है ?

(2) तुमको जमींदार की सबसे बड़ी मूर्खता क्या लगी ? क्यों ?

(ग) 1. नीचे कुछ चिन्ह व उनके नाम दिये हैं। तुम चिन्हों को उनके सही-सही नामों से मिलाओ।

।	प्रश्न वाचक
?	अर्द्ध विराम (कोमा)
!	पूर्ण विराम
,	विस्मयादि बोधक

इन चिन्हों को भी याद करो।

;	अल्प विराम
-	संबंध वाचक (योजक चिन्ह)
" "	उद्धरण चिन्ह

समझो : (पूर्ण विराम, प्रश्न वाचक)

पूर्ण विराम : किसी वाक्य के पूरा हो जाने पर इस चिन्ह (।) का प्रयोग होता है। बोलते समय पूर्ण विराम के स्थान पर थोड़ा सा रूकना पड़ता है।

जैसे : 1. किसी गांव में एक जमींदार रहता था।
2. दादाजी सबको प्यार करते हैं।

प्रश्नवाचक : जब भी कुछ पूछा जाता है या प्रश्न किया जाता है तो अंत में प्रश्न वाचक चिन्ह (?) लगाते हैं।

जैसे : 1. तुम कल क्यों नहीं आए ?
2. क्या तुम उसे जानते हो ?

2. अब तुम नीचे लिखे वाक्यों में पूर्ण विराम (।) व प्रश्नवाचक चिन्ह (?) चिन्ह सही जगह पर लगाओ।

(क) जंगल में शेर रहता है

(ख) खेत में मोर नाच रहा है

(ग) क्या तुम खाना खाओगे

(घ) आगरा कहां है

(ङ) आज हमारी छुट्टी है क्या कल तुम स्कूल आओगे

(च) मैं गांव जा रहा हूं क्या तुम भी मेरे साथ चलोगे

(घ) इस पाठ में आए मुहावरों को ढूंढ़कर उनके अर्थ यहां लिखो ।

मुहावरे	**अर्थ**
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

पाठ-5

बरसात

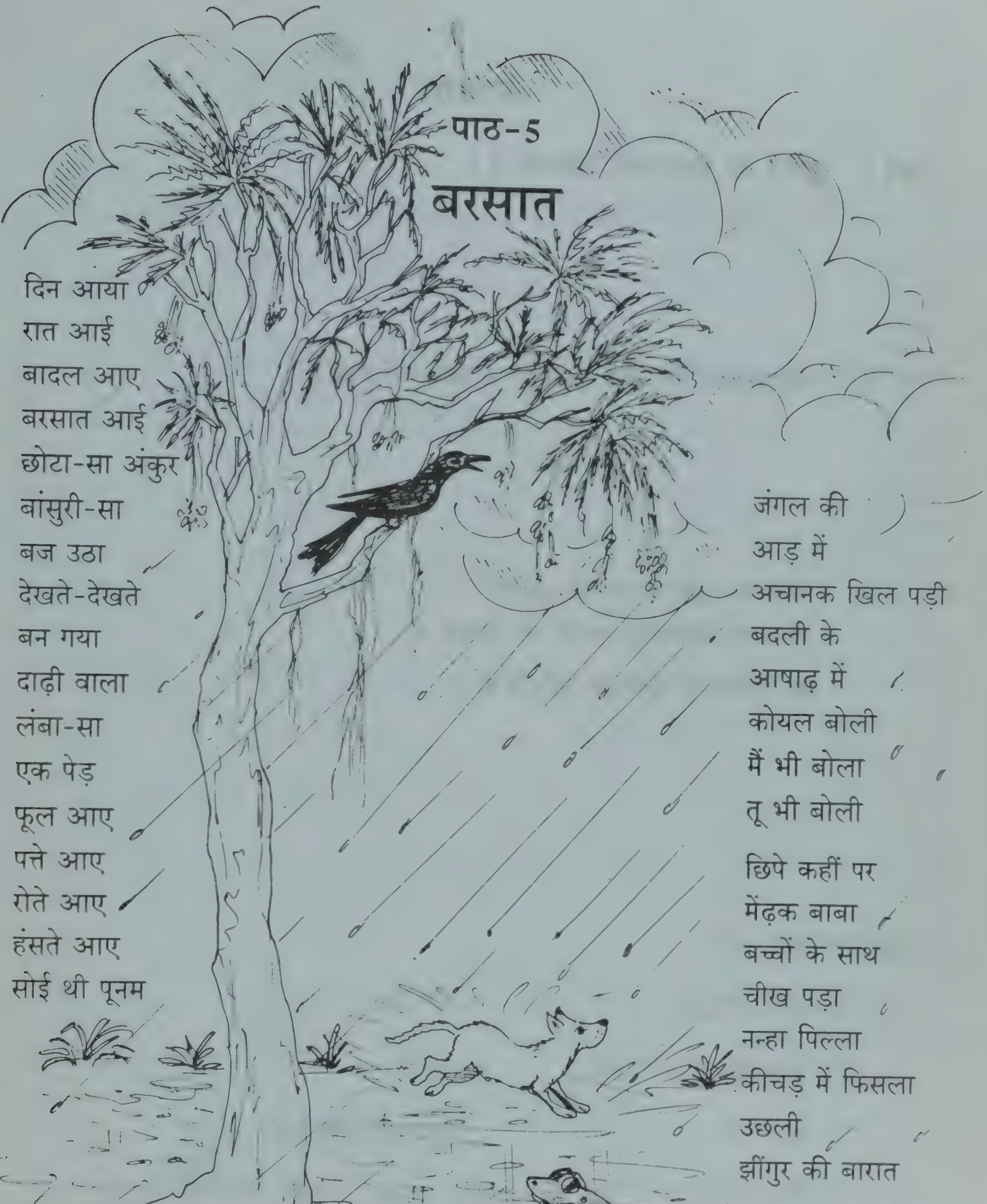

दिन आया
रात आई
बादल आए
बरसात आई
छोटा-सा अंकुर
बांसुरी-सा
बज उठा
देखते-देखते
बन गया
दाढ़ी वाला
लंबा-सा
एक पेड़
फूल आए
पत्ते आए
रोते आए
हंसते आए
सोई थी पूनम

जंगल की
आड़ में
अचानक खिल पड़ी
बदली के
आषाढ़ में
कोयल बोली
मैं भी बोला
तू भी बोली

छिपे कहीं पर
मेंढ़क बाबा
बच्चों के साथ
चीख पड़ा
नन्हा पिल्ला
कीचड़ में फिसला
उछली
झींगुर की बारात

□ लाल्टू

अभ्यास

(क) 1. झींगुर की बारात कब निकलती है?

....

....

2. बरसात आने पर छोटे से अंकुर में क्या-क्या हुआ?

....

....

3. 'सोई थी पूनम जंगल की आड़ में
अचानक खिल पड़ी बदली के आषाढ़ में'
इन पंक्तियों से तुम क्या समझते हो?

....

....

....

(ख) रिक्त स्थान भरो।

(1) छिपे कहीं पर .... बाबा।

(2) नन्हा पिल्ला कीचड़ में .... ।

(3) छोटा सा .... बांसुरी सा बज उठा।

(4) देखते-देखते बन गया .... वाला लंबा–सा एक पेड़।

(ग) 1. किसके लिए कहा गया है? लिखो।

(क) दाढ़ी वाला ....

(ख) रोते आए, हंसते आए ....

(ग) कीचड़ में फिसला ....

2. इस कविता का नाम बरसात है। तुम इस कविता के और कौन-कौन से नाम रखना चाहोगे? कोई तीन नाम बताओ।

....

....

....

3. बरसात के दिनों में और क्या-क्या होता है? सोचकर लिखो।

....

....

....

....

पाठ-6

अन्याय के खिलाफ लड़ाई

बात सन् 1922 की है। उन दिनों अंग्रेजों का शासन था। भारत देश अंग्रेजों का गुलाम था। अपने लोगों को तरह-तरह के अत्याचार सहने पड़ते थे। अंग्रेज शासन ने अपने स्वार्थ पूरे करने के लिए भारत के लोगों को बहुत डरा-धमका कर रखा था। पर उनकी धमकियों के खिलाफ लड़ने की हिम्मत रखने वाले भी लोग थे। ऐसे ही लोग थे आंध्र प्रदेश के कोया आदिवासी। और उनके नेता का नाम था श्रीराम राजू।

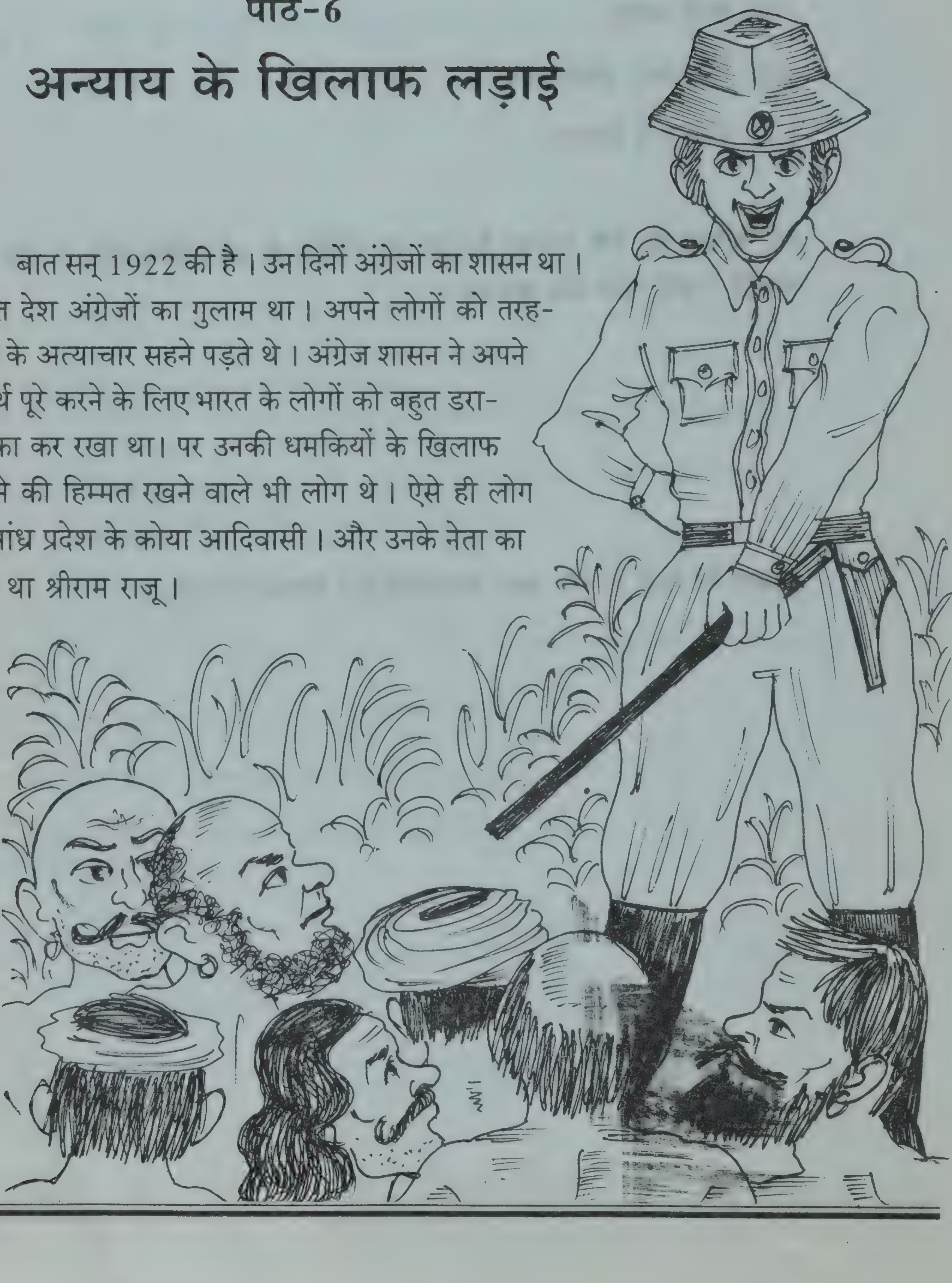

आंध्र के घने जंगलों के बीच रहने वाले कोया आदिवासी सीधी-सादी खेती के माध्यम से अपनी रोजी-रोटी जुटाया करते थे। पर जब से अंग्रेजों ने उनके बीच आकर अपना हक जमाया, उनका जीवन मुश्किल हो गया। अंग्रेजों की योजना थी कि घने जंगलों और पहाड़ों को चीरती हुई एक सड़क बिछाई जाए। पर सड़क के निर्माण कार्य के लिए मजदूर कहां से आएंगे? यह सवाल जब तहसीलदार महोदय के सामने आया तो उनकी निगाह कोया आदिवासियों पर पड़ी। तहसीलदार का नाम था बेस्टीयन। बेस्टीयन को शासन द्वारा सड़क बनवाने का काम सौंपा गया था।

बेस्टीयन स्वभाव से बहुत अक्खड़ और क्रूर था। वह आदिवासियों के गांवों में गया और बड़े घमंड के साथ खूब चिल्ला चिल्लाकर बोला, "दो दिन में जंगल में सड़क बनाने का काम शुरू होगा। तुम सब लोगों को इस काम पर पहुंचना है। अगर नहीं पहुंचे तो ठीक नहीं होगा। अंग्रेज सरकार का हुक्म है, यह जान लो।" आदिवासी लोग चुप हो गए। बेचारे उन घने जंगलों के बीच अकेले पड़े थे। वे कुछ पूछें तो किससे, कुछ करें तो क्या? किसी ने हिम्मत करके तहसीलदार से पूछना चाहा कि काम करेंगे तो बदले में क्या मिलेगा? तो बेस्टीयन का चेहरा तमतमा गया, "क्या मिलेगा? हुक्म बजाना नौकर का काम है। आगे से यह सवाल मत पूछना।"

आदिवासी सहम गए। काम पर जाने लगे। पर उनका मन नहीं मानता था। बेचारे अपमान से अंदर ही अंदर घुट रहे थे और गुस्से से सुलग रहे थे।

उन्हीं दिनों एक साधु जंगलों में आकर रहने लगा था। उस साधु का नाम था, अल्लूरी श्रीराम राजू। श्रीराम राजू ने हाई स्कूल तक पढ़ाई की थी। उसके बाद अगली पढ़ाई छोड़कर 18 वर्ष की उम्र में ही वह साधु बन गया। जब वह उन जंगलों में रहने आया तो आदिवासी लोगों से अच्छी तरह हिल-मिल गया। लोग उसे अपने दुख-दर्द की कहानी सुनाते और पूछते कि कैसे अपने कष्टों से छुटकारा पाएं।

श्रीराम राजू ने आदिवासियों से कहा, "अत्याचार के सामने दबना नहीं चाहिए। तुम लोगों को काम पर जाने से मना करना चाहिए।"

उसकी बात सुनकर आदिवासियों में हिम्मत आई। श्रीराम राजू ने उन्हें यह भी बताया कि देश में और लोग भी अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ लड़ रहे हैं। उनमें एक मशहूर नेता हैं। जिनका नाम गांधी जी है। गांधी जी का कहना है कि भारत के लोगों को अंग्रेज सरकार का सहयोग

नहीं करना चाहिए और उनका काम बंद कर देना चाहिए। अगर कोई अंग्रेज अन्याय करेगा तो हम अन्याय सहने से इन्कार करेंगे।

यह सब सुनकर कोया आदिवासियों का दिल मजबूत हुआ। फिर क्या था, विद्रोह की ऐसी आग भड़की कि अंग्रेजों के होश उड़ गए। भोले-भाले आदिवासियों के मन में भरा सारा अपमान, दुख और क्रोध फट के निकल पड़ा। भद्राचलम से परवथीपुरम तक पूरे इलाके के आदिवासी लोग अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए कूद पड़े। अंग्रेज सरकार के ऐसे छक्के छूटे कि आसपास के राज्यों से सेना बुलानी पड़ी, पर अंग्रेजों की इतनी भारी सेना भी दो साल तक विद्रोह को दबा न पाई।

आदिवासी लोगों का दल इतनी निडरता से कूच करता था मानो उन्हें किसी का भय न हो। आदिवासी लोग ऐसा मानते थे कि श्रीराम राजू के चमत्कार से अंग्रेजों की गोलियां पानी बन जाएंगी। इसी विश्वास से वे गोलियों की परवाह

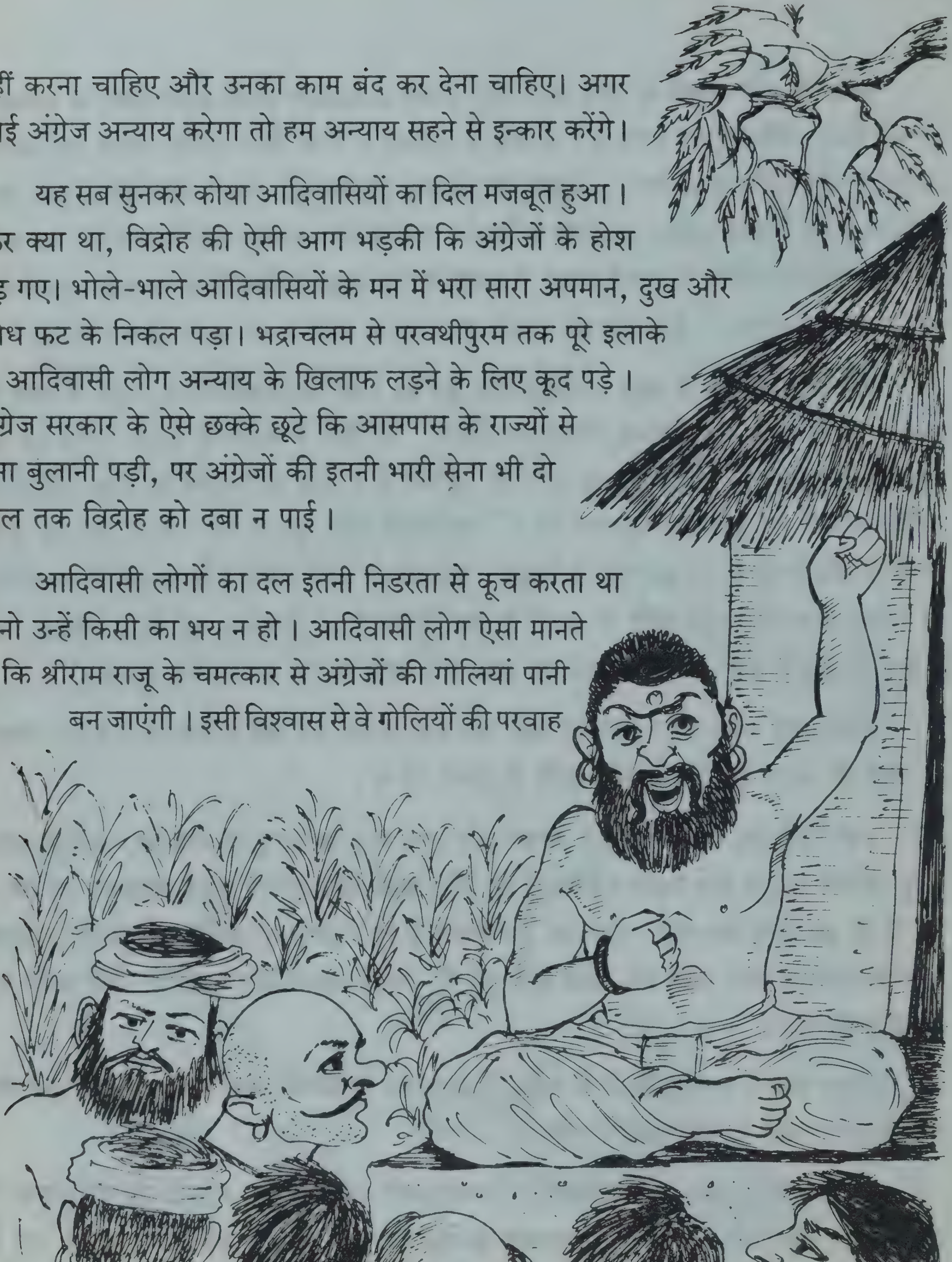

किए बिना पुलिस चौकियों या सेना पर हमला कर देते थे और उनके अस्त्र-शस्त्र लूटकर भाग जाते थे।

श्रीराम राजू ने आदिवासियों से कह रखा था कि अंग्रेजों से लड़ो पर एक भी भारतीय सैनिक का बाल बांका न होने पाए। अंग्रेजों की सेना में बहुत से भारतीय सिपाही भी थे। राजू के आदेश का सख्ती से पालन हुआ। जब पहाड़ों की संकरी पगडंडियों पर से सेना की टुकड़ी गुजर रही होती तो जंगलों में छिपे आदिवासी भारतीय सिपाहियों को गुजर जाने देते, और जैसे ही अंग्रेज सारजेंट या कमांडर नजर आते उन पर अचूक निशाना लगाते। आदिवासियों के विद्रोह से अंग्रेज सरकार इतना डरने लगी कि राजू के दल को आते देखकर थानों से पुलिस भाग जाती थी।

राजू ने एक कोने से दूसरे कोने तक गुप्त संदेश पहुंचाने के लिए गुप्तचरों का जाल फैला रखा था। अंग्रेजी सेना के आने-जाने के संदेश ऐसे पहुंचाए जाते कि किसी को कानों कान खबर न हो। यह सब देखकर अंग्रेजों ने भी अपने दांतों तले उंगली दबा ली।

जंगलों और पहाड़ों में राजू के लोग बड़ी फुर्ती से छिपते-फिरते। ऐसे इलाके में हथियारों से लदी अंग्रेजों की भारी भरकम सेना अपने आपको कमजोर महसूस करने लगती थी। राजू के लोगों को गांव-गांव का सहारा था। गांव के लोग विद्रोहियों को शरण देते और लाख कोशिश करने पर अंग्रेज उनकी खबर नहीं लगा पाते। फिर अंग्रेजों को एक तरकीब सूझी। उन्होंने सोचा कि आदिवासियों को लड़ाई में तो हरा नहीं पाएंगे, अब इन्हें भूखे रखकर मारना पड़ेगा। अंदर जंगल के गांवों में राशन लाने वाले सारे रास्ते बंद कर दिए गये। किसी को भी सामान का एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना मुश्किल हो गया। गांव के लोगों को हारकर अपन पालतू पशुओं को मारकर खाना पड़ा। लोगों की बंदूकों के कारतूस खत्म हो गए। इसके कारण अंग्रेजों के सिपाही गांवों में घुसकर लोगों को मारने-पीटने लगे। यहां तक की उगी हुई फसल को भी जलाया जाने लगा।

आदिवासियों की हिम्मत जवाब देने लगी। आखिर कब तक तकलीफ बर्दाश्त की जा सकती थी। राजू के कुछ साथी पुलिस की पकड़ में आ गए थे। एक बार राजू भी पुलिस की गिरफ्त में आकर बुरी तरह जख्मी हो गया था। लोगों को लगा कि अब राजू का चमत्कार भी उनकी रक्षा करने में असफल है। लोग परेशान होकर राजू के पास पहुंचते। राजू भी परेशान था। उससे उनका दुख देखा नहीं गया। राजू ने सोचा कि अगर मैं अंग्रेजों के सामने आत्म-समर्पण कर दूं तो अंग्रेज

इन हजारों लोगों को रोज सताना बंद कर देंगे । उसने देखा कि दो वर्षों के इतने लंबे संघर्ष के बाद लोगों में कठिनाइयों का सामना करने की तैयारी नहीं रह पाई है और अंग्रेज सरकार तो उन्हें भूखा मारकर ही छोड़ेगी।

यह सोचकर श्रीराम राजू अपने आपको अंग्रेजों के हवाले करने चला। सेना के मेजर गुडॉल, मम्पा गांव में डेरा डाले हुए थे। राजू को गिरफ्तार करके उसके सामने पेश किया गया। गिरफ्तारी की खबर सुनकर आसपास के गांवों के लोग हजारों की संख्या में वहां इकट्ठे होने लगे। मेजर गुडॉल मन ही मन बहुत अधिक खुश हो रहा था । उसे कहां उम्मीद थी कि उनका शिकार खुद जाल में फंसने चला आएगा । राजू मांग कर रहा था कि उसे कचहरी में पेश किया जाए और कानून के हिसाब से उसके साथ बर्ताव हो । पर गुडॉल का कोई इरादा नहीं था कि कोर्ट कचहरी के चक्कर में राजू को अपनी जान बचाने का जरा भी मौका मिले । बस, उसके इशारे पर कुन्चू मेनन नाम के एक सिपाही ने राजू पर गोली चलाई और उसका काम तमाम कर दिया गया।

इस तरह अल्लूरी श्रीराम राजू अपने लोगों की खातिर शहीद हुआ। इसके बाद कोया आदिवासियों का आंदोलन टूट गया । पर अंग्रेज सरकार ने अच्छा खासा पाठ पढ़ लिया था । वे समझ गए थे कि आदिवासियों के साथ मन मर्जी नहीं की जा सकती । तब से आदिवासियों के हितों की रक्षा करने के लिए विशेष कोशिश करने का फैसला हुआ ।

अभ्यास

प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखो।

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो।

शब्द	—	अर्थ
अत्याचार	—	कष्ट पहुंचाना
स्वार्थ	—	खुद के हित की बात
निडरता	—	डर नहीं लगना
आत्म समर्पण	—	खुद को पुलिस के हवाले कर देना
गिरफ्तार	—	पकड़ लेना
कचहरी (कोर्ट)	—	जहां झगड़ों का फैसला होता है।

(ख) 1. बेस्टीयन अंग्रेज सरकार में किस पद पर काम करता था?

2. आदिवासी लोग कहां रहते थे?

3. उस मशहूर नेता का क्या नाम था जो अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ लड़ रहा था?

4. जब श्रीराम राजू ने अंग्रेजों के सामने आत्म–समर्पण कर दिया तो मेजर गुडॉल ने उसके साथ क्या किया?

(ग) 1. बेस्टीयन ने आदिवासियों के गांव में आकर आदिवासी लोगों से चिल्ला-चिल्लाकर क्या कहा?

2. श्रीराम राजू ने आदिवासियों को उनके कष्टों से छुटकारा दिलाने के लिए क्या सलाह दी?

3. श्रीराम राजू ने अंत में अंग्रेजों के सामने आत्म–समर्पण क्यों कर दिया?

4. अंग्रेज सरकार के लोग कोया आदिवासियों पर क्या-क्या अत्याचार करते थे ?
5. कोया आदिवासियों ने अंग्रेजों से किस-किस तरह लड़ाई लड़ी ? (उन्होंने लड़ाई में क्या-क्या काम किये ?)

(घ) प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखो।

1. क्या अत्याचार और अन्याय करना या सहना ठीक है ? यदि नहीं तो क्यों ?
2. तुम अत्याचार और अन्याय का मुकाबला कैसे करोगे ?
3. श्रीराम राजू जैसे ही किसी और शहीद (जिसके बारे में तुम जानते हो) की कोई छोटी-सी घटना का वर्णन करो। जिसने देश के लिए अपनी जान कुर्बान की हो।

(ङ) 1. मुहावरों के अर्थ याद करो। फिर अपने मन से वाक्यों में प्रयोग करके कॉपी में लिखो।

1. छक्के छूटना	हिम्मत हारना
2. बाल भी बांका न होना	कुछ भी न होना
3. कानों क़ान खबर न होना	बिल्कुल पता न लगना
4. दांतों तले उंगली दबाना	आश्चर्य में पड़ जाना
5. काम तमाम करना	मर जाना

पाठ-7

दो गौरैयां

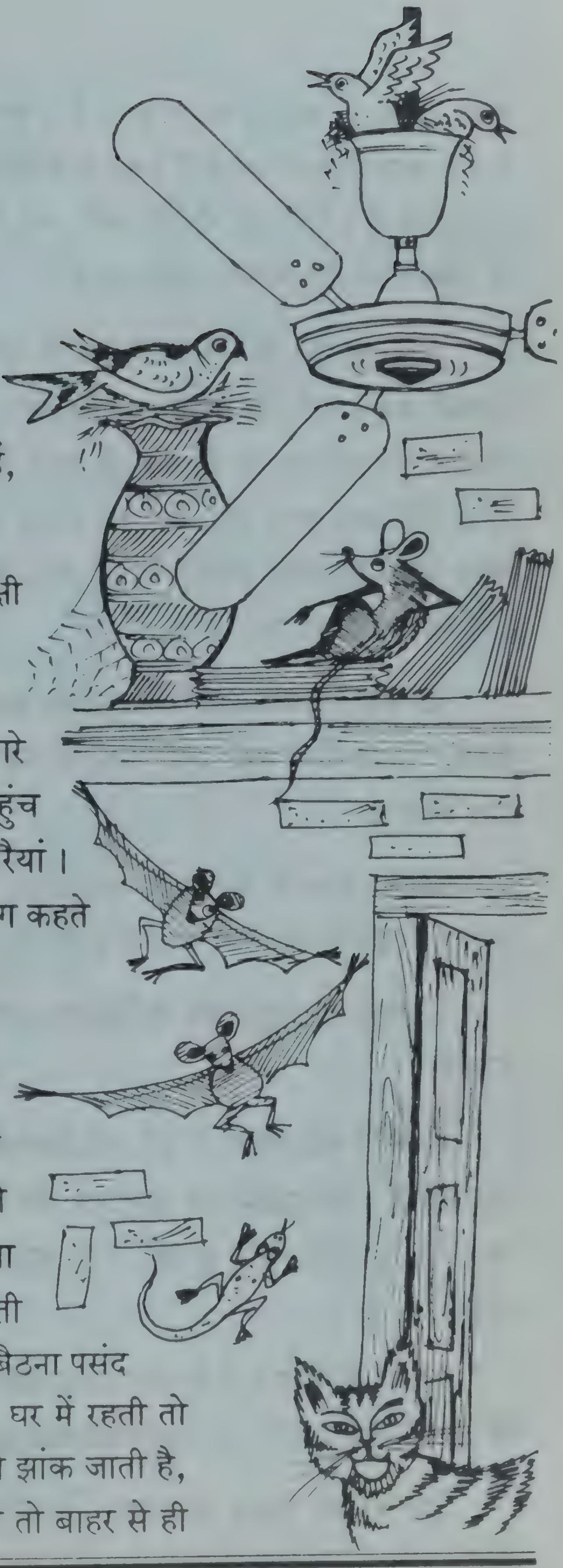

घर में हम तीन ही व्यक्ति रहते हैं - मां, पिताजी और मैं। पर पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है; हम तो जैसे यहां मेहमान हैं, घर के मालिक तो कोई दूसरे ही हैं।

आंगन में आम का पेड़ है। तरह-तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते हैं। जो भी पक्षी पहाड़ियों-घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुंचता है, पिताजी कहते हैं, वही सीधा हमारे घर पहुंच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवाकर लाया हो! यहां कभी तोते पहुंच जाते हैं, तो कभी कौवे और कभी तरह-तरह की गौरैयां। वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएं, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं।

घर के अंदर भी यही हाल है। बीसियों तो चूहे बसते हैं। रात-भर एक कमरे से दूसरे कमरे में भागते फिरते हैं। वह धमाचौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते। बर्तन गिरते हैं, डिब्बे खुलते हैं, प्याले टूटते हैं। एक चूहा अंगीठी के पीछे बैठना पसंद करता है, शायद बूढ़ा है, उसे सर्दी बहुत लगती है। एक दूसरा है ज़िसे बाथरूम की टंकी पर चढ़कर बैठना पसंद है। उसे शायद गर्मी बहुत लगती है। बिल्ली हमारे घर में रहती तो नहीं, मगर घर उसे भी पसंद है, और वह कभी-कभी झांक जाती है, मन आया तो अंदर आकर दूध पी गई, न मन आया तो बाहर से ही

'फिर आऊंगी' कहकर चली जाती है। शाम पड़ते ही दो-तीन चमगादड़ कमरों के आर-पार पर फैलाए कसरत करने लगते हैं। घर में कबूतर भी हैं। दिन भर 'गुटर-गूं, गुटर-गूं' का संगीत सुनाई देता रहता है। इतने पर ही बस नहीं, घर में छिपकलियां भी हैं और बर्रें भी हैं और चींटियों की तो जैसे फौज ही छावनी डाले हुए है।

अब एक दिन दो गौरैयां सीधी अंदर घुस आईं, और बिना पूछे उड़-उड़कर मकान देखने लगीं। पिताजी कहने लगे कि मकान का निरीक्षण कर रही हैं कि उनके रहने योग्य है या नहीं। कभी वे किसी रोशनदान पर जा बैठतीं, तो कभी खिड़की पर। फिर जैसे आईं थीं वैसे ही उड़ भी गईं। पर दो दिन बाद हमने क्या देखा कि बैठक की छत में लगे पंखे के गोले में उन्होंने अपना बिछावन बिछा लिया है, और सामान भी ले आईं हैं और मजे से दोनों बैठी गाना गा रही हैं। जाहिर है, उन्हें घर पसंद आ गया था।

मां और पिताजी दोनों सोफे पर बैठे उनकी ओर देखे जा रहे थे। थोड़ी देर बाद मां सिर हिलाकर बोलीं, ''अब तो ये नहीं उडेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं। अब तो इन्होंने यहां घोंसला बना लिया है।''

इस पर पिताजी को गुस्सा आ गया। वह उठ खड़े हुए और बोले, ''देखता हूं ये कैसे यहां रहती हैं! गौरैयां मेरे आगे क्या चीज हैं! मैं भी जात का खत्री हूं, अभी निकाल बाहर करता हूं।''

''छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!'' मां ने व्यंग्य से कहा।

मां कोई बात व्यंग्य में कहें, तो पिताजी उबल पड़ते हैं। वह समझते हैं कि मां उनका मजाक उड़ा रही हैं। वह फौरन उठ खड़े हुए और पंखे के नीचे जाकर जोर से ताली बजाई और मुंह से 'श...शू...' कहा, बांहें झुलाईं, फिर खड़े-खड़े कूदने लगे, कभी बाहें झुलाते, कभी 'श...शू' करते।

गोरैयों ने घोंसले में से सिर निकालकर नीचे की ओर झांककर देखा और एक साथ 'चीं-चीं' करने लगीं। और मां खिलखिलाकर हंसने लगीं।

पिताजी को गुस्सा आ गया, ''इसमें हंसने की क्या बात है?''

मां को ऐसे मौकों पर हमेशा मजाक सूझता है। हंसकर बोलीं, ''चिड़ियां एक दूसरी से पूछ रही हैं। कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?''

तब पिताजी को और भी ज्यादा गुस्सा आ गया और वह पहले से भी ज्यादा ऊंचा कूदने लगे।

गौरैयां घोंसले में से निकलकर दूसरे पंखे के डैने पर जा बैठीं। उन्हें पिताजी का नाचना जैसे बहुत पसंद आ रहा था। मां फिर हंसने लगीं, ''ये निकलेंगी नहीं, जी। अब इन्होंने अंडे दे दिए होंगे।''

''निकलेंगी कैसे नहीं?'' पिताजी बोले ओर बाहर से लाठी उठा लाए। इसी बीच गौरैयां फिर घोंसले में जा बैठी थीं। उन्होंने लाठी ऊंची उठाकर पंखे के गोले को ठकोरा। 'चीं-चीं' करती गौरैयां उड़कर पर्दे के डंडे पर जा बैठीं।

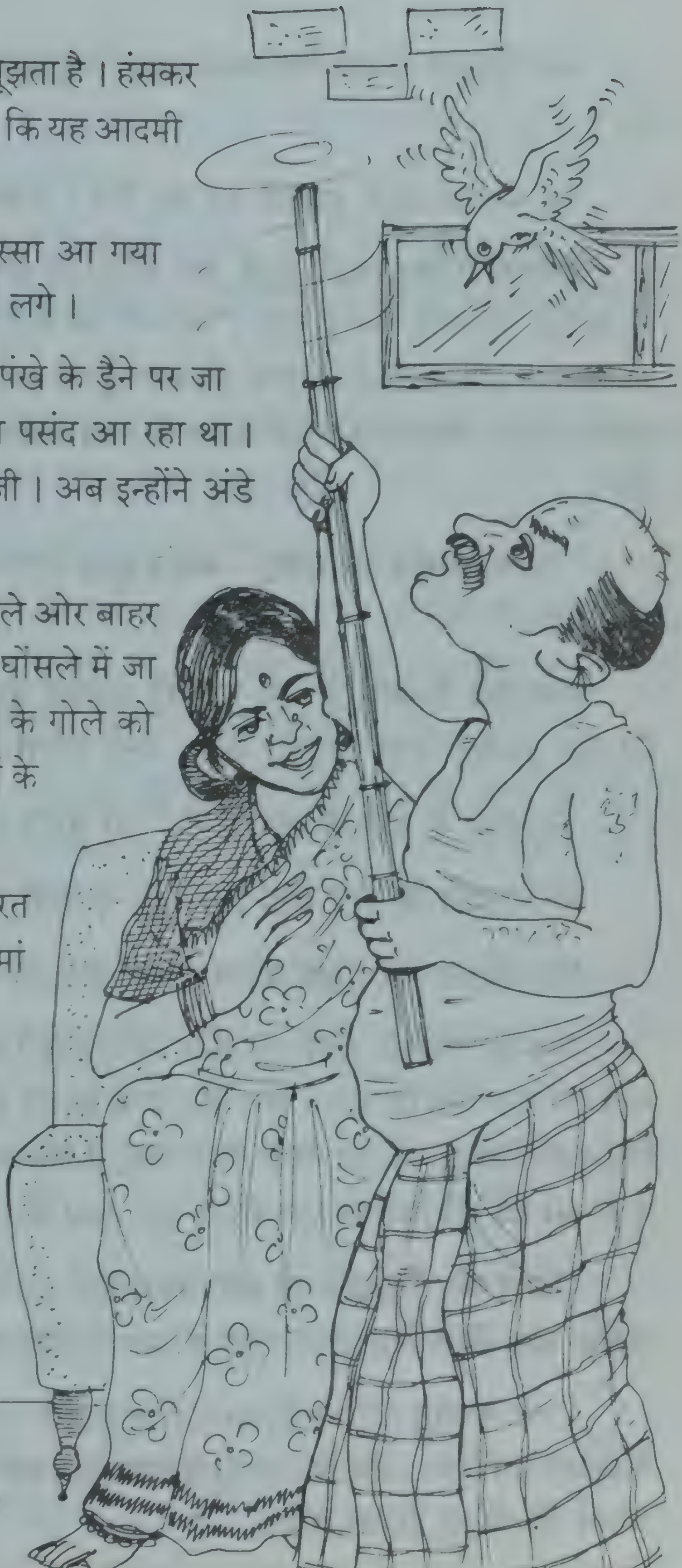

''इतनी तकलीफ करने की क्या जरूरत थी। पंखा चला देते, तो ये उड़ जातीं।'' मां ने हंसकर कहा।

पिताजी लाठी उठाए पर्दे के डंडे की ओर लपके। एक गौरैया उड़कर रसोईघर के दरवाजे पर जा बैठी। दूसरी सीढ़ियों वाले दरवाजे पर।

मां फिर हंस दी, ''तुम तो बड़े समझदार हो जी, सभी दरवाजे खुले हैं और तुम गोरैयों को बाहर निकाल रहे हो। एक दरवाजा खुला छोड़ो, बाकी दरवाजे बंद कर दो। तभी ये निकलेंगी।''

अब पिताजी ने मुझे झिड़ककर कहा, ''तू खड़ा क्या देख रहा है? जा, दोनों दरवाजे बंद कर दे।''

मैंने भागकर दोनों दरवाजे बंद कर दिये। केवल रसोईघर का दरवाजा खुला रहा।

पिताजी ने फिर लाठी उठाई और गौरैयों पर हमला बोल दिया। एक बार तो झूलती लाठी मां के सिर पर लगते-लगते बची। 'चीं-चीं' करती चिड़ियां कभी एक जगह तो कभी दूसरी जगह जा बैठतीं। आखिर दोनों रसोईघर की ओर खुलने वाले दरवाजे में से बाहर निकल गईं। मां तालियां बजाने लगीं। पिताजी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे।

''आज दरवाजे बंद रखो,'' उन्होंने हुक्म दिया। ''एक दिन अंदर नहीं घुस पाएंगी, तो घर छोड़ देंगी।''

तभी पंखे के ऊपर से 'चीं-चीं' की आवाज सुनाई पड़ी। और मां खिलखिलाकर हंस दी। मैंने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा, दोनों गौरैयां फिर से अपने घोंसले में मौजूद थीं।

''दरवाजे के नीचे से आ गई हैं,'' मां बोली।

मैंने दरवाजे के नीचे देखा। सचमुच दरवाजों के नीचे थोड़ी-थोड़ी जगह खाली थी।

पिताजी को फिर गुस्सा आ गया। मां मदद तो करती नहीं थीं, बस, बैठी हंसे जा रही थीं।

अब तो पिताजी गोरैयों पर पिल पड़े। उन्होंने दरवाजों के नीचे कपड़े ठूंस दिए ताकि कहीं कोई छेद बचा नहीं रह जाए। और फिर लाठी झुलाते हुए उन पर टूट पड़े। चिड़ियां 'चीं-चीं' करती फिर बाहर निकल गईं, पर थोड़ी ही देर बाद वे फिर कमरे में मौजूद थीं। अबकी बार वे रोशनदान में से आ गईं थी जिसका एक शीशा टूटा हुआ था।

''देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो,'' मां ने अबकी बार गम्भीरता से कहा, ''अब तो इन्होंने अंडे भी दे दिए होंगे। अब ये यहां से नहीं जाएंगी।''

''क्या मतलब? मैं क़ालीन बरबाद करवा लूं?'' पिताजी बोले। और कुर्सी पर चढ़कर रोशनदान में कपड़ा ठूंस दिया, और फिर लाठी झुलाकर एक बार फिर चिड़ियों को खदेड़ दिया। दोनों पिछले आंगन की दीवार पर जा बैठीं।

इतने में रात पड़ गई। हम खाना खाकर ऊपर जाकर सो गए। जाने से पहले मैंने आंगन में झांककर देखा, चिड़ियां वहां पर नहीं थीं। मैंने समझ लिया कि उन्हें अक्ल आ गई होगी। अपनी हार मानकर किसी दूसरी जगह चली गई होंगी।

दूसरे दिन इतवार था। जब हम लोग नीचे उतरकर आए, तो वे फिर से मौजूद थीं और मजे से बैठी मल्हार गा रही थीं। पिताजी ने फिर लाठी उठा ली। उस दिन उन्हें गोरैयों को बाहर निकालने में बहुत देर नहीं लगी।

अब तो रोज यही कुछ होने लगा। दिन में तो वे बाहर निकाल दी जातीं, पर रात के वक्त जब हम सो रहे होते, तो न जाने किस रास्ते से वे अंदर घुस आतीं।

पिताजी परेशान हो उठे। आखिर कोई कहां तक लाठी झुला सकता है? पिताजी बार-बार कहें, ''मैं हार माननेवाला आदमी नहीं हूं। मैं जात का खत्री हूं।'' पर आखिर वह भी तंग आ गए थे। आखिर जब उनकी सहनशीलता चुक गई, तो वह कहने लगे कि वह गोरैयों का घोंसला नोचकर निकाल देंगे। और वह फौरन ही बाहर से एक स्टूल उठा लाए।

घोंसला तोड़ना कठिन काम नहीं था। उन्होंने पंखे के नीचे फर्श पर स्टूल रखा, और लाठी लेकर स्टूल पर चढ़ गए। ''किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए,'' उन्होंने गुस्से में कहा।

घोंसले में से अनेक तिनके बाहर की ओर लटक रहे थे, गौरैयों ने सजावट के लिए मानो झालर टांग रखी हो। पिताजी ने लाठी का सिरा सूखी घास के तिनकों पर जमाया और दाईं ओर को खींचा। दो तिनके घोंसले में से अलग हो गए और फरफराते हुए नीचे उतरने लगे।

''चलो, दो तिनके तो निकल गए,'' मां हंसकर बोलीं, ''अब बाकी दो हजार भी निकल जाएंगे।''

तभी मैंने बाहर आंगन की ओर देखा और मुझे दोनों गौरैयां नजर आईं। दोनों चुपचाप दीवार पर बैठी थीं। इस बीच दोनों कुछ-कुछ दुबला गई थीं, कुछ-कुछ काली पड़ गई थीं। अब वे चहक भी नहीं रही थीं।

अब पिताजी लाठी का सिरा घास के तिनकों के ऊपर रखकर वहीं रखे-रखे घुमाने लगे। इससे घोंसले के लंबे-लंबे तिनके लाठी के सिरे के साथ लिपटने लगे। वे लिपटते गए, लिपटते

गए, और घोंसला लाठी के इर्द-गिर्द खिंचता चला आने लगा। फिर वह खिंच-खिंचकर लाठी के सिरे के इर्द-गिर्द लपेटा जाने लगा। सूखी घास और रूई के फाहे, और धागे और थिगलियां लाठी के सिर पर लिपटने लगीं। तभी सहसा जोर की आवाज आई, "चीं-चीं, चीं-चीं!!!"

पिताजी के हाथ ठिठक गए। यह क्या? क्या गौरैयां लौट आईं हैं? मैंने झट से बाहर की ओर देखा। नहीं दोनों गौरेयां बाहर दीवार पर गुमसुम बैठी थीं।

"चीं-चीं, चीं-चीं!" फिर आवाज आई। मैंने ऊपर देखा। पंखे के गोले के ऊपर से दो नन्हीं-नन्हीं गौरैयां सिर निकाले नीचे की ओर देख रही थीं। और चीं-चीं किए जा रही थीं। अभी भी पिताजी के हाथ में लाठी थी और उस पर लिपटा घोंसले का बहुत सा हिस्सा था।

नन्ही-नन्ही दो गौरैयां, वे अभी भी झांके जा रही थीं और चीं-चीं करके मानो अपना परिचय दे रही थीं, "हम आ गई हैं। हमारे मां-बाप कहां हैं?"

मैं अवाक् उनकी ओर देखता रहा। फिर मैंने देखा, पिताजी स्टूल पर से नीचे उतर आए हैं। और घोंसले के तिनकों में से लाठी निकालकर उन्होंने लाठी को एक ओर रख दिया है और चुपचाप कुर्सी पर आकर बैठ गए हैं। इस बीच मां कुर्सी पर से उठीं और सभी दरवाजे खोल दिये। नन्हीं चिड़ियां अभी भी हांफ-हांफकर चिल्लाए जा रही थीं और अपने मां-बाप को बुला रही थीं।

उनके मां-बाप झट से उड़कर अंदर आ गए, और चीं-चीं करते उनसे जा मिले और उनकी नन्हीं-नन्हीं चोचों में चुग्गा डालने लगे। मां और पिताजी और मैं उनकी ओर देखते रह गए। कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अब की बार पिताजी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुस्कराते रहे।

❑ **भीष्म साहनी**

अभ्यास

(क) इन प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखो। (तीन पंक्तियों में)

1. घर के अन्दर व बाहर कौन-कौन से जानवर, पक्षी, कीटों ने डेरा जमा लिया था?
2. आखिर जब पिताजी की सहनशीलता चुक गई तो उन्होंने घोंसले के साथ क्या किया?

3. गौरैयों के घोंसले किन-किन चीजों से बने हुए थे?

4. नन्हीं-नन्हीं दो गौरैयां घोंसले में से झांककर क्या कहना चाह रही थीं?

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में साठ शब्दों तक लिखो।

1. पिताजी कहते हैं कि "यह घर सराय बना हुआ है, हम तो जैसे यहां मेहमान हैं, घर के मालिक तो कोई दूसरे ही हैं।" पिताजी ने ऐसा क्यों कहा?

2. पिताजी ने गौरैयों को घर से निकालने के लिए क्या-क्या किया?

3. पिताजी बोले, "क्या मतलब? मैं कालीन बरबाद करवा लूं?" गौरैयों के आने से कालीन कैसे बरवाद होता?

(ग) इस पाठ के प्रारम्भ में सबसे पहला शब्द है, **घर**। दूसरी पंक्ति "घर के मालिक तो कोई दूसरे ही हैं।" इस वाक्य पर खत्म हो गई है। पहली और दूसरी पंक्ति को मिलाकर यह हिस्सा अलग से नजर आता है। इसी तरह देखो, तीसरी पंक्ति से सातवीं पंक्ति तक का हिस्सा अलग से दिखाई देता है। इस तरह के अलग-अलग दिखाई देने वाले हिस्सों को हम **अनुच्छेद** कहते हैं। किसी भी कहानी, लेख, निबन्ध, पत्र आदि में कई अनुच्छेद होते हैं।

अब तुम नीचे लिखे हिस्से को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर बताओ।

लाखों वर्ष पुरानी बात है। एक थी मधुमक्खी और एक था केंचुआ। दोनों एक-दूसरे के पक्के दोस्त थे। दोनों की शक्ल-सूरत भी एक-दूसरे से बहुत मिलती थी।

उन दिनों केंचुआ सूरज की रोशनी से बिलकुल नहीं डरता था। वह पूरे दिन चुपचाप मिट्टी में नहीं लेटा रहता था। वह गाना भी गा सकता था और काफी मोटा-तगड़ा था। उसका सिर बहुत बड़ा था। उसके शरीर पर पैर भी थे, हालांकि वे छोटे-छोटे थे। अगर उस केंचुए को कोई आज देखता, तो हरगिज नहीं पहचान सकता था।

मधुमक्खी की शक्ल-सूरत भी आज जैसी नहीं थी। वह न तो शहद बना सकती थी और न शहद का छत्ता। वह उड़ भी नहीं सकती थी, क्योंकि उसके शरीर पर पंख नहीं थे।

उसका आकार केंचुए से कुछ छोटा था। उसके छह छोटे-छोटे पैर थे। वह न तो आज की तरह फुर्तीली थी और न निपुण। अगर उस मधुमक्खी को कोई आज देखता, तो हरगिज नहीं पहचान सकता था।

1. ऊपर लिखे हिस्से (गद्यांश) का पहला शब्द कौन-सा है? ....
2. ऊपर लिखे हिस्से (गद्यांश) में कितने अनुच्छेद हैं? ....
3. ऊपर लिखे दूसरे अनुच्छेद का पहला व अन्तिम शब्द कौन सा है? ....
4. ऊपर लिखा दूसरा अनुच्छेद तीसरी पंक्ति से प्रारम्भ होता है, तीसरा अनुच्छेद कौन-से नम्बर की पंक्ति से प्रारम्भ हो रहा है? ....

(घ) 1. इस पाठ में से पांच-पांच संज्ञा, सर्वनाम शब्दों को छांट कर लिखो।

	संज्ञा	**सर्वनाम**
1.	....	....
2.	....	....
3.	....	....
4.	....	....
5.	....	....

2. निम्न शब्दों के विलोम शब्द याद करो -

शब्द	**विलोम शब्द**
स्वस्थ	अस्वस्थ
कमजोर	बलवान
लम्बा	नाटा (ठिगना)

बड़ा	छोटा
पिता	पुत्र
दिन	रात
ऊंचा	नीचा
सरल	कठिन

(ङ) निम्न वाक्यों को ठीक करके लिखो।

(1) दिन/दूसरे/था/इतवार ....

(2) नीचे/देखा/दरवाजे के/मैंने ....

(3) आंगन में/आम/ पेड़ है/का ....

(4) बीसियों तो/ बसते/हैं/चूहे ....

(च) क्या तुमने कभी किन्हीं पक्षियों के घोंसलों को देखा है? यदि हां तो किन-किन पक्षियों के घोंसलों को देखा है? लिखो। किसी एक पक्षी के घोंसले का वर्णन अपनी कॉपी में करो। (यदि नहीं देखा तो किसी पक्षी का घोंसला देखो ओर फिर वर्णन करो।)

पाठ-8

गिल्लू

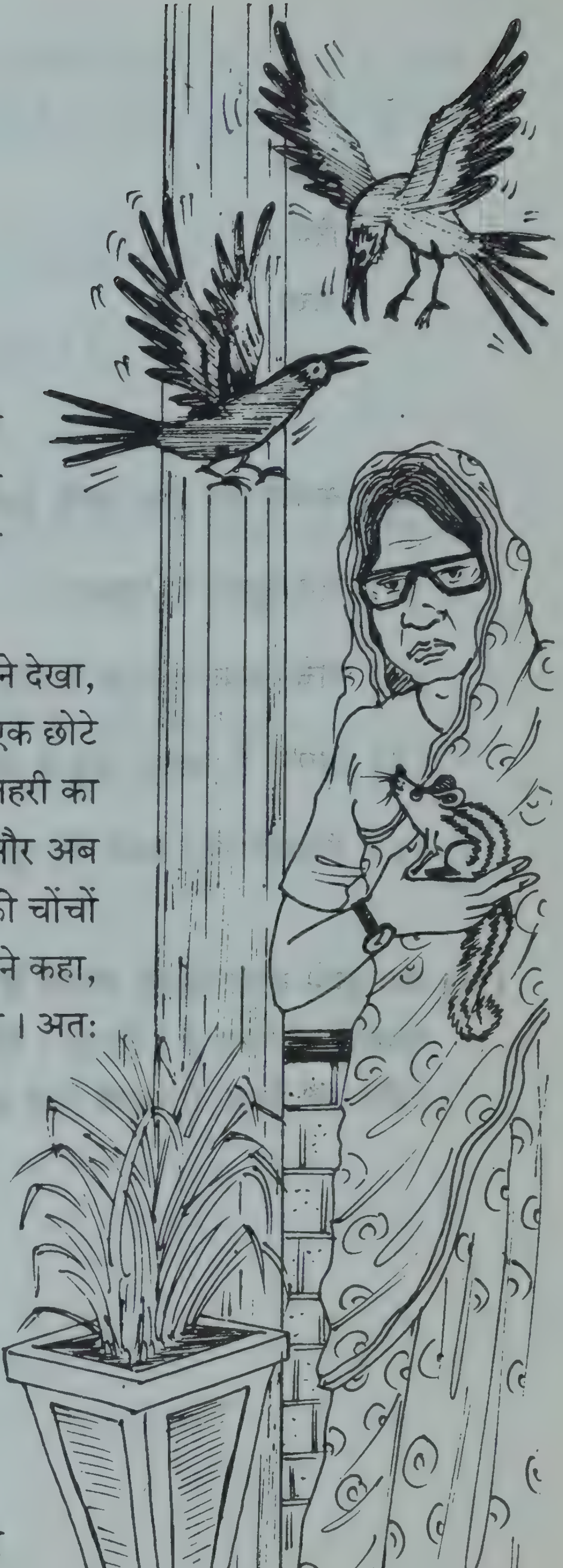

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देखकर उस जीव का स्मरण हो आया, जो इस बेल की हरियाली में छिपकर बैठता था। मेरे निकट पहुंचते ही कंधे पर कूद कर मुझे चौंका देता था।

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे गमले के पास खेल-खेल रहे हैं। गमले के पास एक छोटे से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गयी। निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है। जो शायद घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे उसमें आहार खोज रहे हैं। उसके शरीर पर कौवों की चोंचों से दो घाव बन गये थे। वह गमले से चिपटा पड़ा था। सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता। अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाए।

परन्तु मन नहीं माना - उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लायी, फिर रूई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलिन का मरहम लगाया।

रूई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हें से मुंह में लगायी, परन्तु मुंह खुल न सका और दूध की बूंदें दोनों और ढुलक गयीं।

कई घण्टे के उपचार के बाद उसके मुंह में एक बूंद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और

आश्वस्त हो गया कि मेरी उंगली अपने दो नन्हें पंजों से पकड़कर, नीले कांच के मोतियों जैसी आंखों से इधर-उधर देखने लगा।

तीन-चार महीने में उसके मुलायम रोयें, झब्बेदार पूंछ ओर चंचल चमकीली आंखें सबको विस्मित करने लगीं।

हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रूई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी कांच के मनकों-सी आंखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था। परन्तु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती।

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लम्बे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा छोटा-सा शरीर लिफाफे के भीतर बन्द रहता। इस अद्‌भुत स्थिति में कभी-कभी घण्टों मेज पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आंखों से मेरा कार्य-कलाप देखा करता।

भूख लगने पर चिक-चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़ कर उसे कुतरता रहता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम वसन्त आया। नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियां खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या कहने लगीं।

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झांकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की सांस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

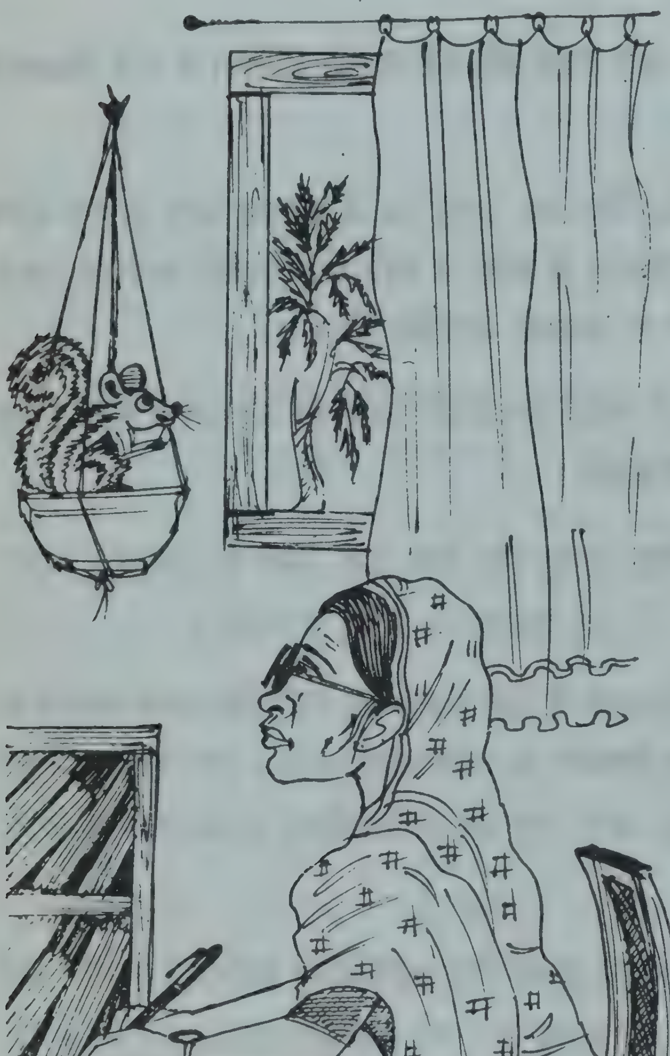

आवश्यक कागज-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बन्द ही रहता है। मेरे कालेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन-भर गिलहरियों के झुण्ड का नेता बना, हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गयी थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परन्तु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे याद नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुंचती, वह खिड़की से निकलकर

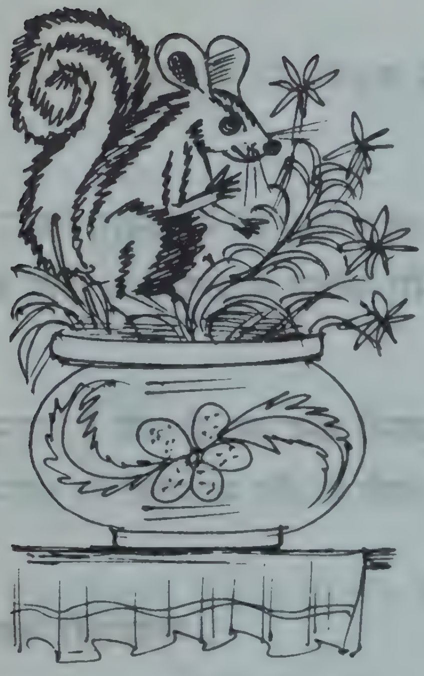

आंगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुंच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहां बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बन्द कर देता था या झूले से नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाजा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिससे पता चलता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पैरों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले से सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

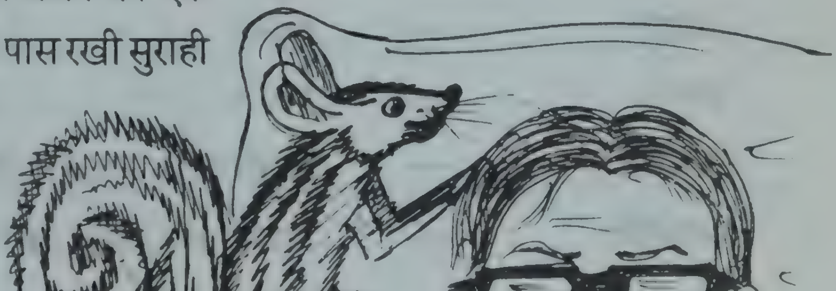

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन-यात्रा का अन्त आ ही गया। दिन-भर उसने न कुछ खाया, न बाहर गया। रात में अन्त की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठण्डे पंजों से

मेरी वही उंगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

पंजे इतने ठण्डे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला उतारकर रख दिया गया है और खिड़की की जाली बन्द कर दी गयी है, परन्तु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिकचिक करती ही रहती है और सोनजुही पर वसन्त आता ही रहता है।

❑ **महादेवी वर्मा**

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो।

शब्द	—	**अर्थ**
सोनजुही	—	एक प्रकार की बेल जिसमें खुशबूदार फूल आते हैं
स्मरण	—	याद
आहार	—	भोजन
उपचार	—	इलाज
विस्मित	—	अचम्भित (अचानक देखने पर होने वाला अचम्भा)
आकर्षित	—	अपनी ओर ध्यान खींचना
तीव्र	—	तेज
नित्य	—	रोजाना
अपवाद	—	ऐसी बात या घटना जो सबसे अलग हो।
खाद्य	—	खाने की चीज
आहत	—	परेशान, चोटग्रस्त

परिचारिका	—	सेविका, सेवा करने वाली
समीप	—	पास में, निकट, नजदीक
यातना	—	कष्ट, दुख
मरणासन्न	—	मरने से पहले का समय या स्थिति
उष्णता	—	गर्मी
प्रभात	—	सुबह, भोर, सेवरा

(ख) प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखो।

1. गिल्लू कौन था?
2. गिलहरियों की जीवन अवधि (उम्र) कितनी होती है?
3. गिल्लू क्या-क्या चीजें खाता था? उसको खाने में सबसे अधिक क्या पसंद था?
4. गिल्लू को लेखिका अपने घर में क्यों ले आई?
5. गिल्लू के जीवन को किन-किन जानवरों से खतरा था?

(ग) 1. गिल्लू की समझदारी और कार्य कलाप पर सबको आश्चर्य क्यों होता था? वह ऐसे कौन-कौन से कार्यकलाप करता था?

2. लेखिका के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने पर गिल्लू के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आ गए? क्यों?

(घ) 1. क्या तुम्हारा भी अपने जीवन में कभी किसी पशु-पक्षी, या जानवर के साथ 'गिल्लू' जैसा प्रेम रहा है? यदि ऐसी कोई घटना हो तो उसे लिखो।

(ङ) समझो : पहले के पाठ में तुम कर्ता को पहचानना जान चुके हो। अब इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो और आगे पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दो।

वाक्य	कर्ता कौन ?	काम क्या हुआ ?
1. शंकर ने पांचू को एक कहानी सुनाई।		
2. घनश्याम ने कबूतरों को दाना डाला।		
3. कुत्ते ने शबनम को काट खाया।		
4. बसंती ने कल बांसुरी को तोड़ डाला।		

ऊपर के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वाक्यों में **कर्ता** क्रमशः शंकर, घनश्याम, कुत्ता ओर बसंती हैं। इसी तरह सभी वाक्यों में काम भी हो रहा है जैसे कहानी सुनाना, दाना डालना, काट खाना, और तोड़ डालना। पर हमने **कर्ता** और होने वाले काम को तो ढूंढ लिया। लेकिन ये काम किसके लिए किये गये?

अब तुम बताओ -

1. शंकर ने कहानी किसको सुनाई? ....
2. घनश्याम ने दाना किसको डाला? ....
3. कुत्ते ने किसको काट खाया? ....
4. बसंती ने किसको तोड़ डाला? ....

समझो : पहले वाक्य का तुम्हारा उत्तर होगा [पांचू को]

यहां शंकर कोई काम कर रहा है। अतः वह [कर्ता] हुआ।

शंकर जिसके लिए काम कर रहा है वह [पांचू] है।

अतः पांचू यहां [कर्म] है।

इसी तरह दूसरे वाक्य में घनश्याम भी **कर्ता** है। जिसके लिए वह काम कर रहा है वो **कबूतर** है।

तो कबूतर यहां [कर्म] है।

तीसरे वाक्य में [कर्म] कौन है? ....

चौथे वाक्य में [कर्म] कौन है? ....

अब तुम नीचे लिखे वाक्यों को पढ़कर सारणी में उत्तर लिखो।

1. राम ने रावण को मारा।
2. बन्दर ने बच्चों को डराया।
3. शिक्षक ने बच्चों को भगा दिया।
4. गीता ने भैंस को मारा।
5. चींटी ने हाथी को पछाड़ा।

वाक्य संख्या	कर्ता	कर्म	होने वाला काम
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

(च) 1. नीचे बनी सारणी से तुम सभी शब्दों को काम में लेकर अलग-अलग तरह से दस वाक्य बनाओ।

आज हमने मैंने कल कल तुम मैं आज आओ हम सब	रामू को मास्टर ज़ी को	कहानी सुनाई। खाना खिलाया। खो-खो खेलना सिखाया। अपने घर ले जाना। अपने साथ खेल खिलाऊंगा।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....
6. ....
7. ....
8. ....
9. ....
10. ....

पाठ-9

चांद से थोड़ी-सी गप्पें

एक दस-ग्यारह साल की लड़की

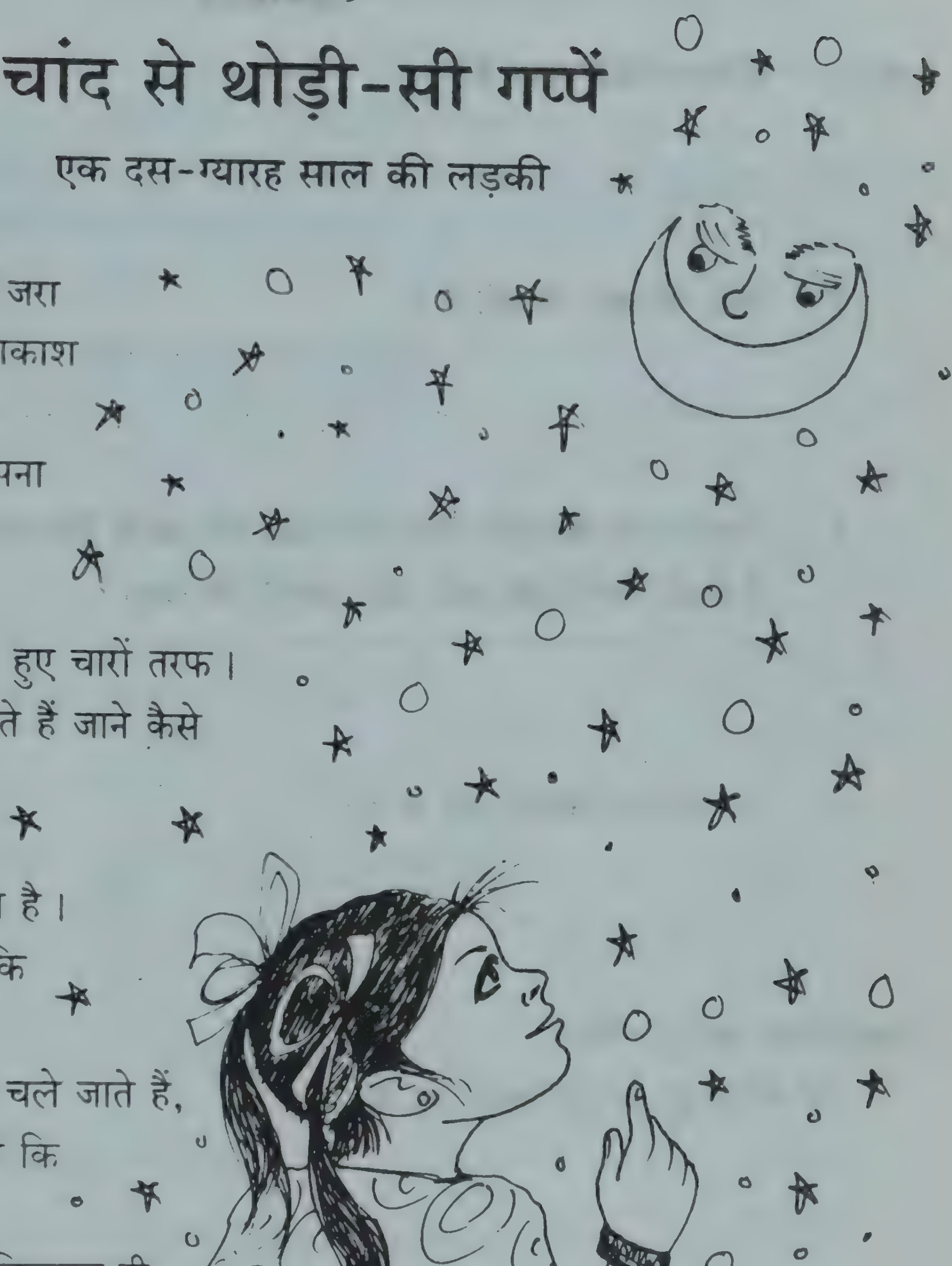

गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नजर आते हैं जरा
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों-जड़ा,
सिर्फ मुंह खोले हुए हैं अपना
गोरा-चिट्टा
गोल-मटोल,
अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों तरफ।
आप कुछ तिरछे नजर आते हैं जाने कैसे
– खूब हैं गो कि !
वाह जी वाह !
हमको बुद्धू ही निरा समझा है।
हम समझते ही नहीं जैसे कि
आपको बीमारी है :
आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं,
और बढ़ते हैं तो बस यानी कि
बढ़ते ही चले जाते हैं -
दम नहीं लेते हैं जब तक बिल्कुल ही
गोल न हो जाएं,
बिल्कुल गोल।
यह मरज आपका अच्छा ही
नहीं होने में।

❑ शमशेर बहादुर सिंह

अभ्यास

(क) 1. पोशाक किसे कहा है?

....

....

2. चांद को क्या बीमारी है?

....

....

3. रोजाना चांद के घटने-बढ़ने को देखो और उसके चित्र अपनी कॉपी में बनाओ। अंत में गिनो कितने दिन घटा और कितने दिन बढ़ा?

....

....

4. यह कविता किसके बारे में है?

....

....

(ख) कविता को पूरी करो -

चंदा मामा दूर के पुए पकाएं बूर के

....

....

....

....

....

....

(ग) 1. इस पाठ की पहली चार पंक्तियों में कुल कितने शब्द हैं? गिनकर लिखो।

....

2. नीचे लिखे शब्दों के बीच में एक निशान (-) लगा है। अब तुम इस किताब में से या अन्य पुस्तकों में से ऐसे ही शब्दों को ढूंढ कर अपनी कॉपी में लिखो, जिनके बीच में ऐसा निशान (-) हो।

जैसे, माता-पिता, गोल-मटोल, गोरा-चिट्टा

....

....

....

....

(घ) 1. खाली स्थान भरो। (पाठ में से वाक्यों को ढूंढ कर)

(क) अपनी .... को फैलाए हुए .... तरफ।

(ख) .... बुद्धू ही निरा समझा है।

(ग) आप पहने हुए हैं .... ।

(घ) आप .... आते हैं जरा।

पाठ-10

तीन बिल्लियां

एक बिल्ली अपने तीन बच्चों के साथ रहती थी। एक का नाम था चितकबरी, एक का नाम कल्लू और तीसरे का भूरा। बिल्ली अपने बच्चों को बेहद प्यार करती थी। वह उनका बहुत ख्याल रखती थी, बड़ी सावधानी से लालन-पालन करती थी। स्कूली उम्र के होने पर बिल्ली ने अपने तीनों बच्चों को स्कूल में भरती करा दिया। तीनों एक ही कक्षा में भरती हो गए।

वे स्कूल में ही रहने लगे और खुशी-खुशी पढ़ने-लिखने लगे। वहां वे खूब मोटे-ताजे हो गए और गरमी की छुट्टियों में मां से मिलने घर आए।

बिल्ली जानना चाहती थी कि उसके बच्चों ने स्कूल में क्या सीखा है? एक दिन उसने बच्चों से पूछा, "क्या तुम स्कूल में अच्छी तरह रहते हो और अच्छी तरह पढ़ते-लिखते हो?"

तीनों बच्चे भरपेट नाश्ता कर चुके थे और बिलकुल मस्त होकर बैठे थे।

भूरा, जो हमेशा सबसे आगे रहने की कोशिश करता था, बोल पड़ा, "हमने ढेर सारी किताबें पढ़ी हैं।" चितकबरी ने कहा, "हमने गाना और चित्र बनाना भी सीख लिया है।" कल्लू बोला, "हमारे स्कूल में खेलकूद-व्यायाम की व्यवस्था भी है।" भूरा खुश होकर फिर बोला, "अगर हम इसी तरह पढ़ते-लिखते रहे, तो जल्दी ही हमें सारी दुनिया की जानकारी प्राप्त हो जाएगी।" उसकी बात खत्म होते ही चितकबरी बोली, "इस तरह हम बहुत बड़े विद्वान बन जाएंगे।"

बच्चों की बातें सुनकर मां बहुत खुश हुई। पर उसे संदेह था कि वे सच बोल रहे हैं या नहीं। उसने पूछा, "बड़े होने पर तुम लोग इतने बड़े विद्वान बनकर क्या करोगे?"

चितकबरी बोली, "मैंने इस सिलसिले में अभी कुछ नहीं सोचा।" कल्लू बोला, "मैं सब काम कर सकता हूं।" भूरा कुछ देर सोचने के बाद बोला, "ज्ञान ही सब कुछ होता है। ज्ञान प्राप्त करने से ही सम्मान मिलता है। हमें और कोई काम करने की जरूरत नहीं है।"

बिल्ली ने देखा, किसी भी बच्चे ने श्रम के बारे में कुछ नहीं कहा। इसलिए उसने दूसरा सवाल पूछा, "क्या तुम्हारे अध्यापकों ने श्रम के बारे में तुम्हें कुछ नहीं बताया?"

इस बार भी सबसे पहले भूरा ही बोला, "हां मां, मैं जानता हूं कि 'श्रम' शब्द कैसे लिखा जाता है। मैं उसे पढ़ सकता हूं। श्र..म श्रम।"

"म्याऊं!" कल्लू म्याऊं ने तिरस्कार के स्वर में कहा। "इसे मैं भी लिख सकता हूं।"

"मैं भी लिख सकती हूं।" चितकबरी बोली।

मां को लगा, उसके बच्चों के दिमाग में कोई न कोई गलत विचार अवश्य घुस गया है। यह सोचकर वह बहुत परेशान थी कि उसके बच्चों को दुनिया की असली हालत के बारे में कुछ भी पता नहीं है। वह बहुत चिंतित थी। इसलिए बच्चों के बारे में पक्की राय कायम करने से पहले उसने फिर पूछा।

"क्या तुममें से कोई यह बता सकता है कि श्रम करने से क्या-क्या फायदे होते हैं? इस शब्द को केवल पढ़ लेना या लिख लेना ही काफी नहीं है।"

इस बार भूरा कुछ नहीं बोला। चितकबरी गरदन एक तरफ लटकाकर सोचने लगी।

बिल्ली ने कुछ सोचकर पूछा, ''क्या तुम सबको मछली खाना पसंद है?''

''क्यों नहीं, जरूर पसंद है!'' मां के इस सवाल पर भूरे को कुछ अटपटा अवश्य लगा। ''मैं तीन मछलियां एक साथ खा सकता हूं।''

''मैं इतनी ज्यादा मछलियां एक साथ हरगिज नहीं खा सकती,'' चितकबरी बोल पड़ी। ''इससे तो मेरा पेट खराब हो जायेगा। मैं एक बार ज्यादा से ज्यादा दो मछलियां खा सकती हूं।''

तभी कल्लू चिल्लाया, ''तुम्हारी बात तुम जानो! मैं तो मौका आने पर एक साथ पांच मछलियां भी खा सकता हूं।''

''कौन कितनी मछलियां खा सकता है, इसके बारे में डींग मारने से कोई फायदा नहीं होगा। तुम्हें पहले मछली पकड़ने की कोशिश करनी चाहिए। मेरा ख्याल है, आज तुम्हें कुछ मछलियां जरूर पकड़ लेनी चाहिये। अगर तुम एक भी मछली पकड़ लाओगे, तो आज शाम के खाने में हम लोग मछली खा सकेंगे। साथ ही मैं यह भी देखना चाहती हूं कि तुम कोई काम कर भी सकते हो या नहीं।''

बिल्ली के तीनों बच्चे राजी हो गए। वे अपने को होशियार तो बहुत ज्यादा समझते थे, पर दिमाग का इस्तेमाल कभी नहीं करते थे। मछली पकड़ने के तरीके के बारे में उन्होंने कोई पूछताछ नहीं की और एक भी उपकरण उठाए बिना नंगे पांव बाहर निकल गए।

बिल्ली के तीनों बच्चे यह नहीं जानते थे कि मछली पकड़ने के लिए उन्हें आखिर कहां जाना चाहिए? वे लगातार चलते गए, पर उन्हें कहीं मछली की परछाईं भी नजर नहीं आई। अंत में तीनों एक जगह बैठ गए और दिमाग लड़ाने लगे। भूरे को कुछ याद आ रहा था। उसने किसी किताब में पढ़ा था, मछलियां नदी, झील या समुद्र में रहती हैं। वे तीनों यह भी नहीं जानते थे कि नदी, झील या समुद्र का पता आखिर कैसे लगाया जा सकता है? उन्हें पहले कभी न तो घर से बाहर निकलने का मौका मिला था और न किसी नदी, झील या समुद्र को देखने का। वहां पहुंचने का उन्हें कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। वे फिर चलने लगे। चलते-चलते वे अपने आस-पास की चीजों को भी देखते जा रहे थे। लगातार चलते रहने के कारण वे बहुत थक गए और उन्हें भूख लग आई। अब तीनों एक पहाड़ी पर एक छोटे-से सोते के पास पहुंचे, तो भूरा खुशी से चिल्ला पड़ा, ''यह देखो, यह नदी है। हमें नदी मिल गई है।''

‘‘तुम सचमुच बड़े होशियार हो,’’ चितकबरी ने समर्थन किया। ‘‘यह जरूर कोई नदी है, क्योंकि यह न तो झील है और न समुद्र। लेकिन इसमें मछलियां क्यों नहीं दिखाई दे रहीं?’’

कल्लू ने गौर से देखा और तपाक से बोला, ‘‘अरे तुम्हें अपने भाग्य को सराहना चाहिए! अच्छा है कि इसमें कोई मछली नहीं है। अगर होती, तो उसे पकड़ते कैसे?’’

बिल्ली के वे तीनों बच्चे सोते के किनारे गुमसुम खड़े थे। अब क्या किया जाए? उनकी अक्ल बिल्कुल काम नहीं कर रही थी।

‘‘हां कुछ देर यहां बैठकर इंतजार करना चाहिए। इस नदी में मछलियां जरूर मिलेंगी,’’ चितकबरी बोल पड़ी।

‘‘ठीक है, जब मछलियां दिखाई देंगी, तो हम पानी में कूद पड़ेंगे और उन्हें पकड़ लेंगे,’’ कल्लू ने कहा।

तीनों बेहद थक गए थे। इसलिए चाहे मछली मिले या न मिले, वहां बैठकर आराम जरूर करना चाहते थे। तीनों उस चमकदार सोते की तरफ टकटकी बांधकर देखते रहे। उनकी आंखें थक गईं, लेकिन मछली कहीं नजर नहीं आई।

भूरे ने आंखें मूंदकर बड़ी तकलीफ के साथ कहा, ‘‘म्याऊं! इतनी छोटी उम्र में मां को छोड़कर बाहर आना और मछली पकड़ना हमारे लिए कितना मुश्किल काम है!’’

कल्लू बोल पड़ा, ‘‘मुझे इस तरह श्रम करने का कोई फायदा नजर नहीं आता।’’

चितकबरी बोली, ‘‘अगर हमें जल्दी ही मछली न दिखाई दी, तो मुझे रोना आ सकता है। लेकिन मैं रोना-बिलखना नहीं चाहती।’’

तभी एक घटना घटी। एक चूहा थका-हारा एक पेड़ के नीचे झपकी ले रहा था। बिल्लियों की बात सुनकर उनकी नींद खुल गई। पहले तो वह बिल्लियों की आवाज सुनकर बहुत घबराया लेकिन जल्दी ही उसे उनकी असलियत मालूम हो गई– उसे पता चल गया कि वे तीनों बिल्ली के बच्चे बिलकुल अनाड़ी हैं। अब वह उनसे डरने के बजाय उन्हें परेशान करने की तरकीब सोचने लगा। वह चाहता था कि उनकी-मां की इच्छा हरगिज पूरी न हो। बिल्ली के बच्चों का होशियार बनना चूहे की समूची बिरादरी के लिए बड़ा खतरनाक था। बिल्ली के तीनों बच्चों को बेहद भूख लग रही थी। उसके मन में बार-बार घर लौटने और खाना खाने का विचार आ रहा था।

"मछली खाने में तो बड़ा मजा आता है, लेकिन उसे पकड़ना सचमुच बड़ा झंझट का काम है," कल्लू ने एक ठंडी आह भरते हुए कहा, "यह तो गणित के सवाल निकालने से भी ज्यादा मुश्किल काम है।"

"मुझे परीक्षा में कम नंबर पाना मंजूर है, पर मछली पकड़ना नहीं," चितकबरी दुःखी होकर बोली। "हमें मां को छोड़कर यहां नहीं आना चाहिए था। आखिर बच्चों को श्रम करने की क्या जरूरत है?"

"बिल्कुल ठीक है।" सोते के उस पार से चूं-चूं की आवाज में कोई बोला। बिल्ली के बच्चों ने चारों तरफ देखा। सामने उन्हें एक भूरा जंतु पेड़ के नीचे बैठा दिखाई दिया। वह उनकी तरफ देखकर सिर हिला रहा था। सच बात तो यह थी कि उन्होंने चूहा पहले कभी देखा ही नहीं था। इसलिए उन तीनों ने उससे

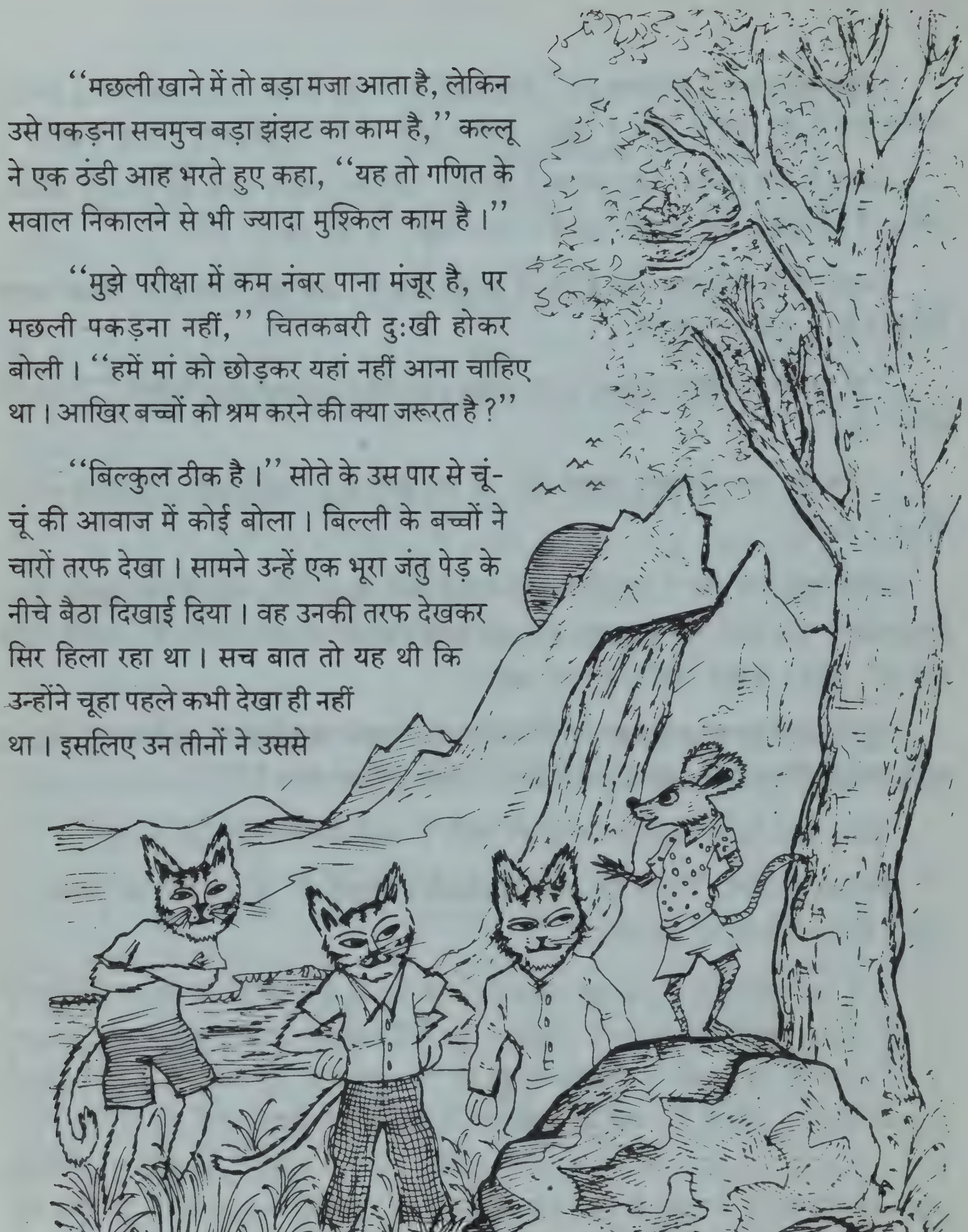

बड़े मैत्रीपूर्ण ढंग से पूछा, ''तुम कौन हो भाई?''

''मैं एक विद्वान हूं। तुम्हारी बातें मुझे बड़ी अच्छी लग रही हैं। मुझे ताज्जुब हो रहा है कि तुम इतने होशियार कैसे बन गए। मुझे पक्का यकीन है कि तुम सब बड़े परिश्रमी हो।''

''मां कहती हैं, श्रम करना एक अच्छी बात है,'' चितकबरी बोली।

चूहे ने अपनी मूंछों पर हाथ फेरा और बोला, ''क्या कहा? श्रम करना एक अच्छी बात है? चूं-चूं चूं-चूं, यह सब बिलकुल बकवास है। अगर तुम लोग श्रम करोगे, तो तुम्हें अपने हाथों का इस्तेमाल करना पड़ेगा। ठीक है ना? और क्या इस तरह तुम बेहद थक नहीं जाओगे?''

''लेकिन जब मैं कसरत करता हूं, तो बिल्कुल नहीं थकता,'' कल्लू बोला। ''लेकिन आज मैं सचमुच थक गया हूं। इसका मतलब यह है कि मैंने आज से श्रम करना शुरू कर दिया है।''

''देखा तुमने, मैंने कितनी सही बात कही है!'' चूहे ने बड़ी धूर्तता से हंसते हुए कहा। वह खुशी से फूला न समाया और अपने होश-हवास खोकर सोते के इस पार आने ही वाला था कि उसे अक्ल आ गई। ''तुम सचमुच बड़े होशियार हो। एक बात और है, श्रम करने से तुम्हारे हाथ-पांव गंदे हो जाएंगे। जरा सोचो तो, अगर तुम गीली रेत पर पांव रखोगे, तो क्या तुम्हारे पांव गंदे नहीं हो जाएंगे?''

लेकिन कल्लू उसकी बात से सहमत न हुआ। ''सुनो,'' वह बोला, ''मुझे लंबी कुदान का अभ्यास करते समय रेत से सन जाना जरा भी बुरा नहीं लगता।''

''यह दूसरी बात है,'' चूहे ने बड़ी चालाकी से कहा। ''लेकिन अगर मछली पकड़ते समय तुम्हारे पांव रेत से सन जाएंगे, तो तुम्हें कैसा लगेगा?''

''मैं रेत में मछली पकडूंगा ही नहीं।'' कल्लू ने उत्तर दिया।

''लेकिन हमारी किताब में यह कहीं नहीं लिखा हुआ है कि रेत में भी मछलियां होती हैं,'' भूरे ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

चूहे ने उसे तिरछी नजर से देखा। वह बोला, ''तुम सचमुच कितने बुद्धिमान हो। हो सकता

है, तुम्हारी किताब में ऐसा न लिखा हो। लेकिन जो किताब मैंने पढ़ी है उसमें तो यह लिखा है कि मछलियां रेत में भी होती हैं। खैर, हमें सवाल पर ज्यादा बहस नहीं करनी चाहिए।''

उसके बोलने की रफ्तार लगातार बढ़ती गई। उसने अपनी बात जारी रखी, ''बच्चो, एक बात और है। अगर तुम श्रम करते रहोगे, तो कभी आजाद नहीं रह सकोगे। क्या तुम आजाद नहीं रहना चाहते? अगर तुम लोग आजाद होते, तो इस समय अपने घर होते और इस सड़ी गरमी में ठाठ से सोए रहते। तुम्हें श्रम करने के लिए बाहर आना पड़ा है ओर जिन मछलियों को तुम पकड़ना चाहते हो वे तुम्हारे पास नहीं फटक रहीं। ऐसी हालत में तुम अपने को आज़ाद कैसे कह सकते हो!''

''तुम ठीक कह रहे हो! बिल्कुल ठीक कह रहे हो!'' बिल्ली के बच्चे एक स्वर से बोल पड़े। चूहे की बात सुनकर वे बहुत खुश हुए और उसकी सराहना करने लगे, ''तुम सचमुच कितने होशियार हो। सचमुच कितने अच्छे हो। क्या हमें अपना नाम नहीं बताओगे?''

चूहा अपनी चाल सफल होती देख मन ही मन बहुत खुश हुआ। इसलिए बिना सोचे-समझे बोल पड़ा, ''मेरा नाम मिस्टर...,'' लेकिन वह अपना असली नाम बताने से पहले ही संभल गया। ''मेरा नाम...क्या तुम लोग मेरा नाम जानना चाहते हो? मेरा नाम 'मुछन्दर महाशय' है। मैं एक बुजुर्ग विद्वान हूं। होशियार बच्चों को बुरी आदतों से बचना चाहिए।''

''चलो, घर चलें,'' कल्लू ने सुझाया।

''लेकिन मछली तो मिली नहीं। हम मछली पकड़े बिना घर कैसे लौटेंगे? मां ने हमें मछली पकड़ने भेजा है। यह बात हमें हरगिज नहीं भूलनी चाहिये। हमारी मां हमें सचमुच कितना प्यार करती है!'' चितकबरी बोली।

भूरे ने चूहे से पूछा, ''मुछन्दर महाशय, क्या हमें इस नदी में मछली मिल सकती है? इंतजार करते-करते हमें कितनी देर हो चुकी है!''

चूहे ने गुस्से का दिखावा करते हुए कहा, ''यह सवाल तुमने पूछ कैसे लिया? मैं तो समझता था कि तुम बड़ होशियार हो। मैं पहले ही बता चुका हूं कि तुम्हें मछली पकड़ने के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिये। दूसरी बात यह है कि मैंने अपने जीवन में बहुत-सी मछलियां देखी हैं, पर यह कभी नहीं सुना कि उन्हें नदी में पकड़ा जाता है।''

"फिर उन्हें कहां पकड़ा जाता है?" कल्लू ने पूछा।

अचानक चितकबरी को एक अजीब सी महक आई। उसने सोचा, यह महक जरूर चूहे से आ रही है। उसने धीरे से काले म्याऊं से कहा, "मुझे एक अजीब-सी महक आ रही है।" कल्लू ने समर्थन किया।

चूहे ने देखा, बिल्ली के बच्चों को उस पर शक होने लगा है। इसलिए वह संभल गया और बोला, "अच्छा, तो मैं चला। नमस्ते।" चूहा सिर हिलाता हुआ जंगल में गायब हो गया।

बिल्ली के बच्चों को खाली हाथ घर लौटना पड़ा। घर लौटते-लौटते वे भूख से निढ़ाल हो गए।

मां ने उनके लिए रात का खाना तैयार कर लिया था। उसे पक्का विश्वास था कि वे खाली हाथ लौटेंगे। खाना खाते समय तीनों बच्चे मां के सामने अपने कारनामों के बारे में खूब डींग मारने लगे।

मां उनकी बातें सुनकर हंसी और बोली, "तुम सोचते हो कि तुम बहुत बड़े विद्वान हो। इसलिए श्रम को तिरस्कार की नजर से देखते हो। मुझे तुम पर और तुम्हारे विद्वान मुछन्दर महाशय पर तरस आ रहा है। क्या तुम जानते हो कि तुम एक दुष्ट चूहे से बातें कर रहे थे? तुमने एक भी मछली नहीं पकड़ी, उलटे एक धूर्त चूहे को अपना दोस्त बना लिया और उसकी सलाह पर चलने लगे। तुम सचमुच कितने बुद्धू हो!"

बिल्ली के तीनों बच्चों का मुंह शर्म से लाल हो गया। लेकिन यह लाली तुम्हें नजर नहीं आ सकती थी, क्योंकि बिल्लियों के मुंह पर बहुत से बाल होते हैं। उन नन्हीं बिल्लियों को अब पता चला कि दुनिया में ओर भी बहुत-सी सीखने लायक बातें हैं।

इसके बाद बिल्ली के उन तीनों बच्चों ने अपनी मां से मछली पकड़ने का तरीका सीखने के साथ-साथ बहुत-सी दूसरी बातें भी सीख लीं।

❑ **येन वनचिङ**

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो।

शब्द		अर्थ
व्यायाम	—	कसरत करना
विद्वान	—	ज्ञानी
श्रम	—	मेहनत
उपकरण	—	औजार
सराहना	—	तारीफ करना, प्रशंसा करना
तिरस्कार	—	अपमान

(ख) प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखो।

1. बिल्ली और उसके तीनों बच्चों के नाम क्या-क्या थे?
2. भूरा ने अपनी मां को श्रम के बारे में क्या बताया?
3. बिल्ली के तीनों बच्चे सोते के किनारे गुमसुम क्यों खड़े थे?
4. बिल्ली ने अपने बच्चों को मछलियां पकड़ने क्यों भेजा?
5. चूं-चूं चूहे ने अपना नाम क्या बताया?

(ग) 1. बच्चों की मां अपने बच्चों के बारे में क्यों परेशान थी?

2. चूं-चूं चूहा क्या चाहता था? क्यों?

(घ) 1. चूं-चूं ने बिल्ली के बच्चों को श्रम के बारे में क्या-क्या बताया?

2. चूहा सिर हिलाता हुआ जंगल में क्यों गायब हो गया ?

3. यदि बिल्ली के बच्चों ने कभी श्रम किया होता या उन्हें श्रम के महत्त्व का सही पता होता तो वे क्या करते ?

(ङ) 1. क्या मेहनत के बारे में पुस्तकें को पढ़ लेना और लिखना-पढ़ना जान लेने से तुम मेहनत के महत्व को समझ सकते हो ? मेहनत के असली महत्त्व का पता कब चलता है ?

2. यदि मेहनत करने वाले लोग मेहनत करने से मना कर दें या वे लोग मेहनत नहीं करें तो क्या होगा ?

(च) समझो [अर्द्ध विराम (,) विस्मयादि बोधक (!)]

अर्द्ध विराम (,) : जब वाक्य के बीच में थोड़ा-सा रूकने की जरूरत पड़ती है या कई सारे नामों के बीच अन्तर करने के लिए इसका प्रयोग होता है।

जैसे- 1. गधा, घोड़ा, बकरी, गाय और ऊंट सब पालतू पशु हैं।

विस्मयादि बोधक (!) : जब बातचीत और वाक्यों के बीच में कोई अचम्भे की बात हो तो इसका प्रयोग होता है।

जैसे- 1. वाह! वाह! कितनी सुन्दर मूर्ति है।

2. अरे! अरे! ये क्या कर रहे हो ?

अब तुम नीचे लिखे वाक्यों में अर्द्ध विराम और विस्मयादि बोधक चिन्हों को लगाओ।

(1) अजीत अब्दुल रेशमा रामू और घनश्याम पांचों जने साथ-साथ स्कूल जाते हैं।

(2) आ ह ह ह मजा आ गया।

(3) अरे अरे सुनो तो सही।

(4) मैं अपने थैले में रबर पेंसिल कॉपी और किताब रखता हूं।

(छ) 1. निम्न शब्दों को बहुवचन से एकवचन में बदलो।

बहुवचन	**एकवचन**
कुर्सीयां	....
टेबलें	....
ढाणियां	....
साईकिलें	....
लड़कियां	....
लकड़ियां	....
पंखे	....
मोटरें	....
घड़े	....
औरतें	....

पाठ - 11

पत्र

(फ्योदोर दोस्तोएव्स्की की गिनती दुनिया के महान् उपन्यासकारों में होती है। रूस के जार के विरूद्ध जो विद्रोह हुआ था, उसमें वह शामिल थे। विद्रोह विफल हो गया। दोस्तोएव्स्की को गिरफ्तार करके साइबेरिया भेजा गया था। वहां जाने से पहले जिंदगी और मौत के बीच झूलते रहने की अवस्था में यह पत्र लिखा गया था)

पीटर व पालफोरट्रेस
दिसंबर 22, 1849

मेरे प्रिय भाई,

मुझे साइबेरिया में कारावास की सजा सुना दी गई है। कल हम साइबेरिया के लिए रवाना होंगे। दिसंबर 1859 तक साइबेरिया में रहते हुए हमें चार वर्ष व्यतीत हो जाएंगे। इन चार वर्षों के उपरांत मुझे फौज में भर्ती होना है और एक आम सैनिक की भांति लड़ना होगा। आज प्रातः हमें अपनी जेल के आंगन में ले जाया गया। हमारी शमशीरें हमारे सिर पर तोड़ी गयीं। मेरे तीन साथियों को एक खंभे से बांध दिया गया। गोली से उड़ाए जाने वालों में मैं छठा था। मेरे पास जिंदगी का सिर्फ एक क्षण शेष रहा था। आखिरी क्षण में मैंने तुम्हें याद किया था। तभी अचानक खंभे से बंधे कैदियों को वापस ले जाया गया और बताया कि हमें गोली से न उड़ाकर साइबेरिया भेजा जाएगा।

कल हम यह जगह छोड़ देंगे। फौज में भर्ती होने तक तुमसे मुलाकात नहीं हो सकेगी। तुम्हें यह पत्र मैं बड़ी जल्दी में लिख रहा हूं। उत्तर शीघ्रातिशीघ्र देना। तुम्हारा पत्र पाकर मुझे खुशी होगी।

भैया, मैं दुखी नहीं हूं। जीवन तो सर्वत्र जीवन है। यह तो हमारे भीतर है, बाहर नहीं। इसलिए मैं दुःखी होने से इंकार करता हूं।

वहां भी मेरे चारों ओर लोग होंगे। मेरा काम जीवन में मनुष्यों में इंसान बनना है। बैठकर रोना और कलपना नहीं।

चाह थी कि मैं पढ़ूं और पुस्तकें लिखूं। शायद दोनों ही नहीं कर पाऊंगा। परन्तु मेरा हृदय प्रेम कर सकता है, चाह, स्मरण सब कुछ कर सकता है, करता रहेगा और यही सब कुछ तो जीवन है।

मुझे कुछ पैसों की जरूरत है। कुछ तो यथाशीघ्र भेजें ही। पत्र लिखना न भूलें और हां, पत्र जरा लंबा हो। स्वजनों के बारे में जरूर बताना। तुम्हारे पत्रों से मुझे आशा और सुख मिलेगा।

क्या आज तुमने मेरे बारे में सोचा? जानते हो मैं आज जिंदा हूं।

जीवन का अधिकांश कीमती समय मैंने भूलों और सपनों में बर्बाद कर दिया। समय का सदुपयोग करना मुझे आया ही नहीं। न जिंदा रहने की कला ही जान पाया हूं। मैं अब जीवन में कभी भी आशाहीन नहीं होऊंगा। हृदय में खुशियां लेकर जीऊंगा।

कल मेरी यात्रा शुरू होगी। तुम्हें कब लिखूं? तुम जब तक मुझे पैसे नहीं भेजोगे, मैं तुम्हें लिख नहीं पाऊंगा। अलविदा मेरे भैया, मैं अपनी सभी प्रिय वस्तुओं से दूर जा रहा हूं। किसी का भी दो टूक होना कितना कष्टप्रद होता है। प्रसन्न चित्त से मुझे याद करना। मुझे मालूम है मेरी तुम्हारी भेंट जरूर होगी। अलविदा, अलविदा पुनः।

तुम्हारा भाई
फ्योदोर दोस्तोएव्स्की

अभ्यास

(क) पढ़ो और समझो -

साइबेरिया = एक जगह का नाम जो रूस में है। बहुत ठंडी जगह, जहां कैदियों को सजा काटने के लिए भेजा जाता था।

शमशीरें = तलवारें

कलपना = विलाप करना

व्यतीत = बीतना, बीत जाना
उपरांत = बाद में
शीघ्रातिशीघ्र = जल्दी से जल्दी, बहुत जल्दी
सर्वत्र = सब जगह

(ख) 1. इस पत्र का लेखक कौन है? और उसने यह पत्र किसको लिखा है?

....

....

2. यह पत्र कहां से और किस दिन (तारीख) लिखा गया था?

....

....

3. खंभे से बंधे कैदियों को अचानक क्या बताया गया?

....

....

(ग) 1. पत्र का लेखक अपने जीवन के वारे में क्या-क्या विचार बता रहा है?

....

....

2. पत्र का लेखक दु:खी होने से इंकार क्यों करता है?

....

....

(घ) नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर लिखो -

1. इस पत्र के पहले अनुच्छेद का अंतिम शब्द क्या है? ....
2. इस पत्र में कितनी बार पूर्णविराम (।) चिन्ह आया है? ....
3. इस पत्र में कितनी बार अर्द्ध विराम (,) चिन्ह आया है? ....
4. इस पत्र में कितनी बार प्रश्नवाचक (?) चिन्ह आया है? ....
5. इस पत्र में कितनी बार विस्मयादिबोधक (!) चिन्ह आया है? ....

(ड़) तुम भी अपने किसी मित्र/सहेली या रिश्तेदार को पत्र लिखो, जिसमें तुम अपने मन की वे बातें लिखो, जो तुम उसे बताना चाहते हो।

(च) इस पत्र से तुम्हें इस समय के रूस के हालात के बारे में क्या जानकारी मिलती है?
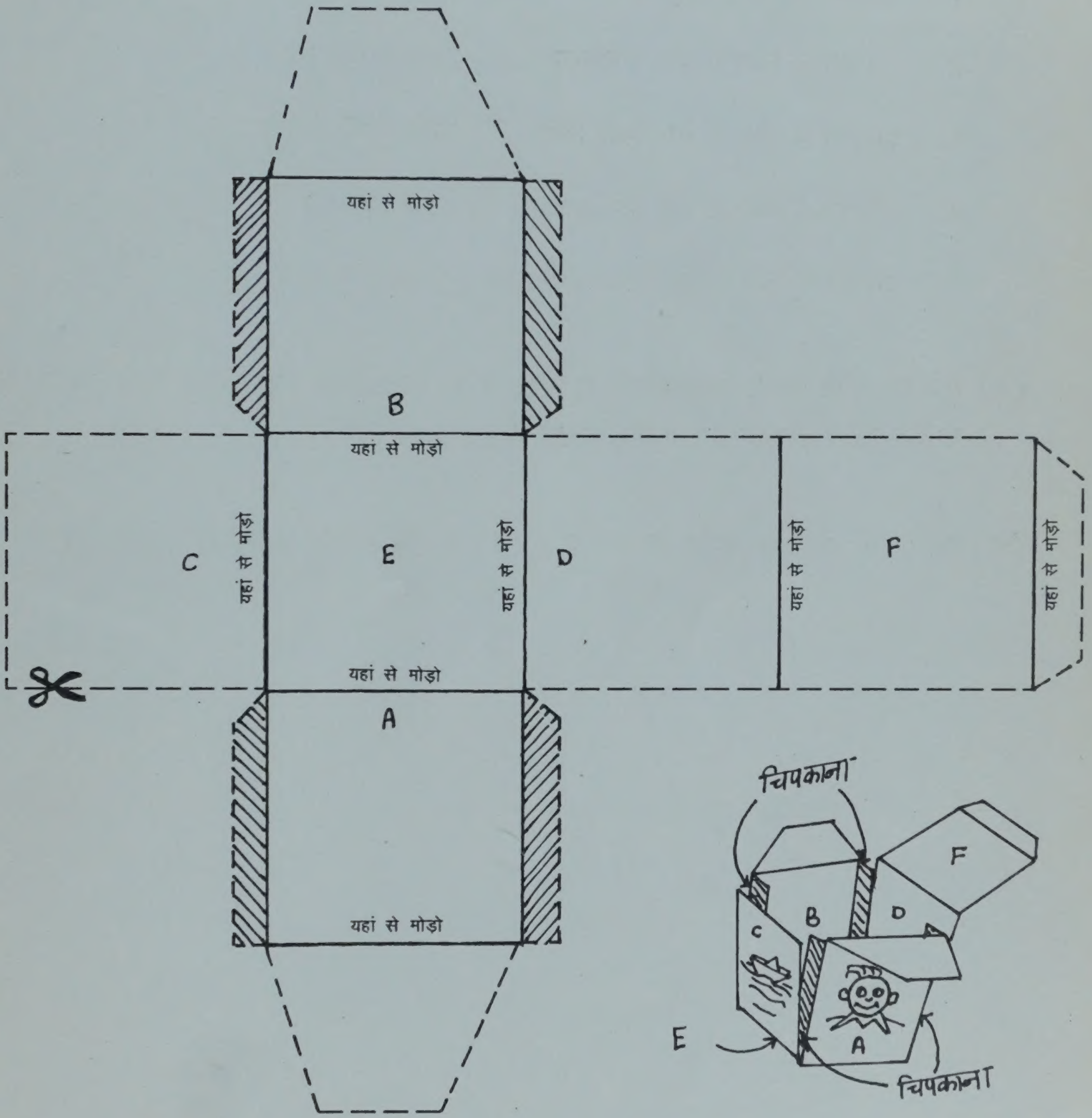
नीचे बिन्दु रेखा से बने चित्र को काटो व डिब्बे के बने हुए चित्र को ध्यान से देखो और अब तुम इस कटी हुई आकृति से डिब्बा बनाओ । डिब्बे के ऊपर तुम अपनी पसंद के चित्र भी बना सकते हो ।